अप्रैल-२०१६ ◆ वर्ष ४ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अप्रैल-२०१६

नवसंवत्सर आशाओं की
ज्योति जगाता,
दूर हो नैराश्य तिमिर संदेश सुनाता।
हो प्रकाश का अर्चन वन्दन,
तम को दूर भगाता।
ऐसे जी जीवन तू मानव,
सत्यार्थप्रकाश सन्देश सुनाता।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५२

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
चैत्र कृष्ण अमावस्या
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

April- 2015

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
०६ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ४/१६
०८ सोम का न्याय
१२ डॉ. अम्बेडकर
१६ अक्षर विज्ञान का मूल वेद
१७ घर के अन्दर बैठे आतंकी
२० आया नववर्ष संकल्प करें
२१ जल जंगल पहाड़ को बचाओ
२४ वन्दनीय और निन्दनीय
२५ आत्मचिन्तन का अवसर
२८ कथा सरित-जीवन का पुल
२९ सत्यार्थ-पीयूष-राजनीति और धर्म
३० स्वास्थ्य-हृदय रोगों से बचाव

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ११

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

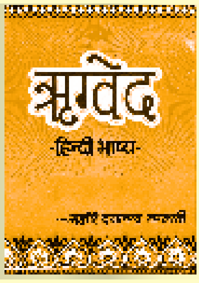

वेद सुधा

बीती ताहिं बिसार दे

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२ गतांक से आगे ....

मनुष्य जीवन में ऐसी समस्याएँ आ जाती हैं कि जिनके कारण वह शोकाकुल हो जाता है। चाहे पहाड़ जैसी विपत्ति भी क्यों न आ जाए, मनुष्य शोक न करे, क्योंकि इससे कोई समस्या नहीं निपटेगी। संसार में कोई किसी कारण से शोकग्रस्त है और कोई किसी कारण से। फारसी के कवि ने लिखा है-

अगर ग़म रा चो आतिश दूद बूदे,
ज़हाँ तारीक गर्दे-जाविदाना।।

यदि संसार में गम का धुआँ होता तो संसार सदा के लिए अँधेरे से भर जाता। संसार में लोग कई प्रकार के गम लगाये बैठे हैं। इसी गम का शिकार होकर कई व्यक्ति अपने जीवन से हाथ धो बैठे। चिन्ता और शोक से कोई भी समस्या नहीं सुलझ सकती। जिस काम के करने से इच्छित फल की सिद्धि न हो, उस काम को न करना ही श्रेयस्कर है।

ऐसी ही परिस्थितियों के लिए सातवाँ ज्ञान-सूत्र यह है कि गई बीती दुःखप्रद घटनाओं का बार-बार स्मरण नहीं किया जाए। जो भी दुःखप्रद घटनाएँ जीवन में घटती हैं, वे अपना कटु प्रभाव अपने पीछे छोड़ जाती हैं। कभी ऐसी घटना घटती है जिसका तात्कालीन प्रभाव बहुत बुरा पड़ता है, परन्तु समय बीतने पर वह कटु प्रभाव क्षीण होता जाता है। पुनः स्मरण करने पर यह प्रभाव अपना रंग दिखाता रहता है। स्मृति के आने पर वे कटु संस्कार फिर जागृत हो जाते हैं। इसका परिणाम यह निकलता है कि मनुष्य का भावी जीवन कटुतापूर्ण एवं विषादमय बन जाता है। इसलिए गई बीती दुःखप्रद घटनाओं का बारबार स्मरण न किया जाए ताकि कटु संस्कार जागृत न हों।

कहते हैं कि एक व्यक्ति को एक बार टाइफाइड हो गया। वह कई दिन बीमार रहा और उसके पश्चात् स्वस्थ हो गया। उसका कोई सम्बन्धी अथवा मित्र बीमार पड़ता तो वह उसका हाल पूछने के लिए उसके पास जाता। उसका हाल पूछने के पश्चात् वह उसे अपने टाइफाइड का वृतान्त सुनाता। वह कहता कि टाइफाइड का ज्वर बहुत भयंकर होता है। व्यक्ति उसमें बहुत कष्ट की अनुभूति करता है। वह इस प्रकार एक लम्बी कथा सुनाता। फिर किसी अन्य मित्र अथवा सम्बन्धी के यहाँ जाता तो फिर वही कहानी सुनाता। इसका परिणाम यह निकला कि वह सूखकर अस्थि-पंजर मात्र रह गया, क्योंकि उसके शरीर का टायफाइड तो कभी का उतर चुका था, परन्तु उसके मस्तिष्क का टाइफायड नहीं उतरा था। अतः जीवन में मानसिक सन्तुलन के लिए यह आवश्यक है कि मस्तिष्क के टाइफ़ाइड को उतारा जाय अर्थात् बीती दुःखप्रद घटनाओं का बार-बार स्मरण न किया जाए।

ऐसी सभी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय और आठवाँ ज्ञान-सूत्र है ईश्वरार्पण भावना। जब व्यक्ति सच्चे हृदय से अपने जीवन की बागडोर ईश्वर को अर्पित कर देता है और उसे ही अपनी जीवनरूपी नौका का नाविक समझ लेता है तो वह सुख-दुःख, हानि-लाभ, विजय-पराजय और मानापमान को ईश्वर का प्रसाद समझता है। फिर वह कर्म तो करता है, समस्याओं के निवारणार्थ प्रयत्न भी करता है, परन्तु चिन्ता और शोक के बोझ को मन पर नहीं रखता। वह अपने को सदा सामान्य स्थिति में ही अनुभव करता है। यदि जीवन का सब कुछ भी उसके हाथ से निकल जाए तो उस समय भी वह प्रसन्नतापूर्वक कह उठता है-

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सब तोर,
तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर !

धन, सम्पत्ति, सन्तान, सम्मान एवं प्राणों के जाते समय भी जिसके मन में यही भाव रहता है, उसे इन परिस्थितियों में क्या शोक और क्या चिन्ता! आर्य समाज के महान् नेता सर्वस्वत्यागी महात्मा हंसराज जी का एक बहुत प्रिय भजन है। वह भजन

उनका स्वनिर्मित था जिसे वे प्रातःकाल उठकर गाया करते थे। उसका एक पद्य जो समर्पण भावना से ओतप्रोत है, यहाँ उपस्थित किया जाता है-

यह तन, यह मन होवे न अपना, है सब माल तुम्हारा,
जब चाहो तब ही तुम ले लो, नहीं कुछ ज़ोर हमारा।

जब समर्पणकर्त्ता ने अपने जीवन को ईश्वर के अर्पण कर दिया तो चाहे उसे जीत मिले चाहे हार, उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती।

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।

गृहस्थ सुख का छठा आधार पंच महायज्ञ है। इन पंचमहायज्ञों का विधान वैदिक धर्म में ही है, अन्य किसी मतमतान्तर के पास यह व्यवस्थाबद्ध यज्ञ-प्रणाली नहीं है। पंचमहायज्ञ का यदि सरलतम शब्दों में अनुवाद किया जाए तो बनता है- पाँच सबसे ऊँचे कर्म। इस अनुवाद से ही इनकी उपयोगिता और उपादेयता को समझा जा सकता है। ये पंचमहायज्ञ अर्थात् सबसे ऊँचे कर्म हैं- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ।

मैंने अपने चिन्तन और अनुभव के आधार पर गृहस्थ सुख के जो छः साधन गिनाये हैं उनमें पहले चार साधनों का सम्बन्ध भौतिक एवं शारीरिक सुख के साथ अधिक है मानसिक सुख के साथ कम। पाँचवें साधन का सम्बन्ध मानसिक सुख से अधिक है और शारीरिक सुख से कम; परन्तु छठे साधन का मुख्य सम्बन्ध हमारे आध्यात्मिक सुख के साथ है। गृहस्थ जीवन की सर्वतोमुखी सफलता इसी में है कि गृहस्थ को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों प्रकार के सुख प्राप्त हों। यह गृहस्थ रूपी चित्रण का एक पक्ष है और इसका दूसरा पक्ष स्वार्थ और परार्थ से सम्बन्धित है। गृहस्थ सुख के पाँच साधनों का सम्बन्ध स्वार्थ अर्थात् अपनेपन के साथ है परन्तु छठे साधन का सम्बन्ध स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ से है हमारा जीवन केवल अपने लिए ही न हो, अपितु दूसरों के लिए भी हो। हम केवल शरीर और मन तक ही न रह जाएँ अपितु आत्मा तक भी पहुँचें। यह छठा साधन आध्यात्मिकता और परार्थ की कमी को पूरा करता है।

मनु महाराज ने गृहस्थ जीवन के सुख साधनों पर दृष्टिपात करते हुए इनकी आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था-

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।। - मनु. ४।२१

गृहस्थ को चाहिए कि इन पाँच यज्ञों को यथाशक्ति न छोड़ें।

वे पंचमहायज्ञ हैं-ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ। ब्रह्मयज्ञ के दो भेद हैं- सन्ध्योपासना और स्वाध्याय।

नैतिकता और ईश्वरोपासना मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के दो बहुत बड़े आधार होते हैं। कुछ लोगों का विचार है कि केवल नैतिकता से ही मनुष्य का आध्यात्मिक विकास हो सकता है, ईश्वरोपासना की कोई आवश्यकता नहीं। यह विचार आधा गलत है और आधा ठीक है। नैतिकता और ईश्वरोपासना दोनों मिलकर मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के कारण बनते हैं। नैतिकता का सम्बन्ध मनुष्य के आचरण व व्यवहार से है। नैतिक उत्थान के बिना तो मनुष्य, मनुष्य ही नहीं हो सकता, परन्तु ईश्वरोपासना के बिना भी उसका मनुष्यत्व अधूरा है।

जीव ईश्वर की उपासना क्यों करे? उपासना विरोधी यह बहुत बड़ा प्रश्न किया करते हैं। उसका उत्तर यह है कि जीव आनन्द-शून्य है, वह आनन्द की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर की उपासना करना चाहता है। जैसाकि तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है-

रसो वै सः। रसꣳह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति।

अर्थात् परमात्मा आनन्दमय है और उससे आनन्द को प्राप्त करके जीवात्मा आनन्दमय हो जाता है। जैसे सुख की खोज जीव की स्वाभाविक इच्छा है, वैसे ही आनन्द और शांति की खोज जीवात्मा की स्वाभाविक इच्छा है। इसी स्वाभाविक इच्छा की पूर्ति के लिए मनुष्य ईश्वरोपासना करता है। मनुष्य को प्रायः सुख की इच्छा रहती है, आनन्द की नहीं; इसलिए सुख-प्राप्ति के निमित्त मनुष्य सांसारिक वस्तुओं की ओर प्रायः दौड़ते हैं। जहाँ सांसारिक पदार्थों से मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है वहाँ इस पूर्ति से सुख की प्राप्ति भी होती है। संसार में आनन्द और ईश्वर-साक्षात्कार के इच्छुक बहुत विरले व्यक्ति होते हैं। पंचमहायज्ञों में ब्रह्मयज्ञ को इसीलिए रखा गया है कि गृहस्थ केवल सुख का इच्छुक न होकर आनन्द का भी इच्छुक हो। इसके पश्चात् देवयज्ञ को स्थान दिया गया। वायु और स्थान की शुद्धि के लिए इस यज्ञ को रखा गया। वेदमंत्रों के द्वारा जब

यज्ञ की क्रियाओं को सम्पन्न किया जाता है तो इससे यज्ञ करने वाले के संस्कार पवित्र होते हैं। इसमें 'स्व' तक न रहकर 'पर' तक पहुँचने की भावना छिपी हुई है। जहाँ वायु और स्थल-शुद्धि से हम अपना उपकार करेंगे, वहाँ दूसरों का भी उपकार करेंगे।

पितृयज्ञ में जीवित माता-पिता और दादा-दादी की सेवा का विधान है। जीवित माता-पिता की सेवा प्रत्येक गृहस्थ का कर्तव्य है। जिन माता-पिता ने अपने महान् त्याग से हमारा लालन-पालन किया, उनकी सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है। जिस वात्सल्य भाव में भरकर उन्होंने हमारा पोषण किया, उसके बदले में हम श्रद्धा से भरपूर होकर उनकी सेवा करें। यह मानो वात्सल्य और श्रद्धा का आदान प्रदान है। वृद्ध माता-पिता को वृद्धालयों में न भेजकर हम स्वयं उनकी सेवा करें, इस कर्तव्य कर्म को ऋषियों ने पितृयज्ञ का नाम दिया और उसे पंचमहायज्ञ में सम्मिलित किया।

गृहस्थाश्रम की शोभा का एक अन्य कारण है अतिथियज्ञ। जो विद्वान् सत्योपदेष्टा बिना तिथि आ जाएँ, उनकी सेवा और सत्कार करना अतिथि यज्ञ कहलाता है। गृहस्थ की बहुत बड़ी शोभा इसी में है कि घर आये अतिथि का सत्कार किया जाए। जिस घर में अतिथि सत्कार की भावना नहीं, वह घर श्मशान तुल्य है।

बलिवैश्वदेवयज्ञ को इनमें सम्मिलित करके पंचमहायज्ञ की शोभा को और अधिक बढ़ा दिया गया है। इस यज्ञ की महिमा इस तथ्य में है कि मनुष्य अपने प्यार को पशुओं, पक्षियों और रोगियों तक फैलाये। अपने अन्न में से पहले कुत्तों, कौओं, कीड़ें-मकोड़ों और पाप-रोगियों के लिए कुछ भाग प्रदान करें। सब प्राणियों के प्रति प्रेमभाव को दर्शाने के लिए इस यज्ञ का विधान किया गया है। इन पंचमहायज्ञों को अपनाए बिना गृहस्थाश्रम शोभायमान नहीं हो पाता।

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ४/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	क	■	२	दा	२	■	■	३ गो		■
■	४	■	५	तु	■	■	■	६	हि	६
■	७ दू		७		स्थ ७	■	८		क्त ८	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. गृहाश्रम में प्रवेश-पूर्व न्यूनतम कितने वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन अवश्यक है?

२. आचार्य का किससे सत्कार करें?

३. विवाह सम्बन्ध में कन्या और वर के बीच किसको बचाना चाहिए?

४. जिससे विवाह करना हो वह कन्या माता के कुल की कितनी पीढ़ियो में न हो?

५. एक गोत्र, मातृ-पितृ कुल में विवाह करने से किस वस्तु के अदल-बदल न होने से उन्नति नहीं होती?

६. दूर देश में विवाह करने से कन्या क्या कहलाती है?

७. स्वामी दयानन्द ने कैसे विवाहों को श्रेष्ठ माना है?

८. दूर-देश में विवाह के समर्थन में स्वामी दयानन्द ने किसका प्रमाण प्रस्तुत किया है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २/१६ का सही उत्तर

१. वेद २. नास्तिक ३. विरोध ४. वेदान्त
५. मनुष्यमात्र ६. पाखण्डियों ७. परमेश्वर

"विस्तृत नियम पृष्ठ १५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०१६

आत्म निवेदन

तकनीक का दुरुपयोग बनाम सदुपयोग

मनुष्य जो कुछ भी आविष्कार करता है उसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वह गलत है या सही। तकनीक अपने आप में न बुरी होती है न अच्छी। यह तो उपयोगकर्त्ता के ऊपर निर्भर करता है कि वह उस तकनीक का अपने और मानव समाज के कल्याणार्थ प्रयोग करता है अथवा विनाश के लिए। जैसे चाकू का प्रयोग सब्जी काटने के लिए भी किया जा सकता है तथा किसी का खून करने के लिए भी। आज इन्टरनेट के आविष्कार ने दुनिया ही बदल दी है। जानकारी प्राप्त करने तथा संचार के क्षेत्र में क्रान्ति आ गयी है, आप एक 'कीवर्ड' गूगल पर डालिए और असीमित जानकारी आपके समक्ष होगी। अगर समुचित प्रयोग किया जाय तो कम्प्यूटर वरदान है। कागज का उपयोग कम से कम किया जा रहा है, जो हमारी लकड़ी की आवश्यकता कम कर देगा फलस्वरूप पेड़ों की कटाई में कमी आवेगी। पढ़ाने के तरीके में व्यापक उन्नत परिवर्तन हुए हैं। संसार भर की नाना विषयों की जानकारी आपके एक इशारे पर उपलब्ध है। यहाँ तक कि व्यापार का तरीका भी बदलता जा रहा है। अब आपको कड़ी धूप में अपनी आवश्यकता की वस्तु तलाशने के लिए हैरान होने की आवश्यकता नहीं है, सब कुछ बिकने के लिए ऑन-लाइन बाजार में उपलब्ध है।

पर यहाँ सब कुछ अच्छा ही अच्छा नहीं है। अश्लीलतम साहित्य बिना रोकथाम के सबको उपलब्ध है। सर्वे बताते हैं कि ६० प्रतिशत यूजर्स इन्हीं वेब-साइटों में भ्रमण करते रहते हैं जो कि स्पष्टतः सांस्कृतिक व नैतिक अधःपतन की जिम्मेदार हैं। इन्हें प्रतिबन्धित करना भी आसान नहीं है। सोशल मीडिया (फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर आदि) 'कनेक्टिंग' के साथ अफवाहें फैलाने, गालियाँ देने , भड़ास निकालने के प्लेटफार्म भी बन गए हैं। कुल मिलाकर बात यही है कि इनका लाभ या नुकसान उपयोगकर्त्ता के ऊपर निर्भर है। यहाँ ऐसी साइटें भी हैं जो 'आनंद लेकर कैसे आत्महत्या की जाय', यह भी सिखाती हैं। कुछ वर्ष पूर्व मुम्बई में एक छात्र की आत्महत्या के पीछे ऐसी ही एक साईट का हाथ था।

अब पूरे विश्व के समक्ष एक चुनौती पैर पसार रही है वह है इण्टरनेट का अत्यधिक प्रयोग। जैसे शराब आदि का नशा व्यक्ति को व्यसनी बना देता है यही कार्य अब संचार के ये आकाशीय साधन कर रहे हैं। चीन में विद्यार्थियों ने विद्यालय जाना छोड़कर साइबर कैफे का रास्ता अपना लिया है। वहाँ इस लत को छुड़ाने हेतु शिविर लगाये जा रहे हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि तकनीक के ज्यादा इस्तेमाल के कारण लोगों में अर्ध-अनिद्रा की स्थिति तेजी से बढ़ रही है। लोगों की थकान से सम्बन्धित परेशानियों को दूर करने वाली एक सलाहकार संस्था 'द एनर्जी प्रोजेक्ट' के अध्यक्ष जीन गोम्स ने कहा कि हमने ३०००० पीड़ितों पर पाँच साल तक शोध किया, संभवतः तकनीक ही इसका प्रमुख कारण है। अस्तु।

इण्टरनेट की तकनीक व ऐसी ही अन्य तकनीकों के दुरुपयोग के अनेक उदाहरण सामने आते रहते हैं। अपराधों में अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग होने लगा है। आपने फिल्म 'मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस.' देखी होगी। उसमें ब्ल्यूटुथ का प्रयोग कर एक अनपढ़ को डॉक्टरी की परीक्षा में उत्तीर्ण कराया गया था। पता नहीं इसी फिल्म से प्रेरणा लेकर या स्वतः उपजी दुर्बुद्धि से प्रवेश परीक्षाओं में ऐसी तकनीकों के दुरुपयोग से प्रवेशार्थियों को सफल कराने की बाढ़ ही आ गयी है। जब तक ये मामले खुले तब तक न जाने कितने मुन्नाभाई डॉक्टर तथा इंजीनियर बन गए। एक प्रदेश की एक परीक्षा हो तो हम गिनाएँ।

मध्य प्रदेश के व्यापमं घोटाले ने सर्वाधिक ख्याति प्राप्त कर ली। राजस्थान भी कोई पीछे नहीं रहा। यहाँ ब्ल्यूटुथ सहित विशेषरूप से तैयार किये गए वायर्ड अंडर गारमेंट्स का उपयोग किया गया। जब पोल खुलने लगी तो परीक्षाएँ रद्द होने लगीं। ऐसी स्थिति में बिना कोई अपराध मेहनती विद्यार्थियों के साथ क्या बीतती है ये तो वही जानते हैं। पूरी तैयारी के साथ ऐसे परीक्षार्थी हर समय इस आशंका से ग्रसित रहते हैं कि न जाने कब परीक्षा रद्द होने के आदेश आ जावें। २०१५ की आल इंडिया मेडिकल टेस्ट परीक्षा, नकल प्रकरण के कारण उच्चतम न्यायालय ने रद्द कर दी। दिल्ली विश्वविद्यालय के मुक्त विद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया, राजस्थान विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग तथा डेंटल एंट्रेन्स में पेपर लीक हुए।

यह तकनीक के दुरुपयोग की इंतहा थी। पर अब तकनीक का सहारा लेकर ही प्रशासन इस स्थिति से निबटने की तैयारी कर रहा है। परीक्षा केन्द्रों पर 'मोबाइल जेमर' लगाने के बारे में सोचा जा रहा है ताकि ऐसे उपकरण काम ही न कर सकें। यद्यपि लगभग पूरे विश्व में जेमर का उपयोग गैरकानूनी है पर यूक्रेन में विद्यालयों में इसके प्रयोग की इजाजत है।

"जैसे शराब आदि का नशा व्यक्ति को व्यसनी बना देता है, यही कार्य अब संचार के ये आकाशीय साधन कर रहे हैं।"

अब बड़ी-बड़ी परीक्षाओं में ऑनलाइन परीक्षा का प्रस्ताव है। 'इम्परसोनेशन' को रोकने के लिए फिंगर प्रिंट्स लेने का इंतजाम किया जा रहा है। ऑनलाइन परीक्षा में भी प्रश्न-पत्रों के कई पेपर सेट तैयार होंगे। परीक्षा शुरू होने के आधा घंटे में भी खबर मिलेगी कि प्रश्नपत्र लीक हो गया है तो दूसरा पेपर सेट दे दिया जावेगा। परीक्षार्थियों के प्रश्नपत्रों में प्रश्नों का क्रम भिन्न-भिन्न होगा आदि-आदि। दिलचस्प बात यह है कि नकल की ये समस्या केवल भारत में ही नहीं है चीन भी इस समस्या से जूझ रहा है। वहाँ की परीक्षा 'गाओकाओ' जिसमें ६० लाख विद्यार्थी बैठते हैं, में केवल 'स्पायी बनियान' ही नहीं 'स्पायी चश्मे' तथा 'स्पाई पर्स' का भी इस्तेमाल किया गया है।

वहाँ तो ड्रोन और सी. सी. टी. वी. की सहायता से नकल रोकने का इंतजाम किया जा रहा है। आस्ट्रेलिया के दो विश्वविद्यालयों ने स्मार्ट घड़ियों को परीक्षा कक्ष में ले जाना निषिद्ध कर दिया है। अब ड्रोन का सहारा लेने की योजना बनायी जा रही है । हावर्ड विश्वविद्यालय में पहली बार पृथक् से शपथ लेने का प्रावधान किया जा रहा है कि वे चीटिंग नहीं करेंगे।

तकनीक के सफल व सही स्थल पर प्रयोग के भी अनगिनत उदाहरण हमारे समक्ष हैं।

एक नया सूचना तंत्र ट्विटर तेजी से फैल गया है। अभी हाल में रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने इसका सही उपयोग कर अनेक जरूरतमंदों को सहायता पहुँचायी है। एक ट्रेन को किसी कारणवशात् कई घंटे रुकना पड़ा, उसमें सैंकड़ों छात्र भूखे-प्यासे थे। ट्विटर पर खबर मिलते ही मंत्री जी ने आश्चर्यजनक तेजी के साथ सारा प्रबन्ध करा दिया। एक शहर की दो लडकियाँ घर छोड़ अनजान यात्रा पर निकल पड़ीं। लड़की के पिता ने मंत्री जी को ट्विटर सन्देश भेजा। लड़कियों को नासिक में बरामद कर पिता को सौंप दिया गया।

मेरठ के सरधना के छुर गाँव से २६ वर्ष पहले कामकाज की तलाश में जमील नाम का किशोर सन् १९८७ में घर से भागकर मुम्बई चला गया था। तब से उसका अपने परिवार से नाता टूट गया था। जब वह घर से भागकर मुम्बई गया था तब उसकी उम्र १६ वर्ष थी। साल २०११ में जमील का विवाह तय हुआ तो उसने अपने विवाह का कार्ड फेसबुक पर अपलोड किया। जिसे उसके भतीजे शाहनवाज उर्फ शान पुत्र शकील और चचेरे भाई आसिफ ने देखा। किसी तरह फोन पर उन्होंने जमील से सम्पर्क किया। फेसबुक इस मिलन का साधन बन गया।

अभी हाल में ही जर्मनी के एक शरणार्थी शिविर में गुरप्रीत नाम की एक भारतीय महिला फस गयी थी। सोशल मीडिया के माध्यम से पता चलने पर भारतीय दूतावास ने विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के निर्देशन में उसे वहाँ से निकाल कर भारत पहुँचाया।

सभी जानते हैं कि नकली नोट के सौदागरों ने देश की अर्थव्यवस्था को कितना परेशान कर रखा है। आम व्यक्ति अथवा आम

व्यापारी नकली और असली नोटों में विभेद नहीं कर पाता लिहाजा उनको नकली नोट आसानी से हस्तांतरित कर दिए जाते हैं परन्तु अब तकनीक का सफल प्रयोग कर ऐसी मशीन का ईजाद किया गया है जो नोटों की गिनती के साथ नकली नोटों की पहचान कर उन्हें अलग कर देती है ।

अब भ्रष्टाचार को रोकने हेतु धीरे-धीरे सब कुछ ऑनलाइन किया जा रहा है। आप अपने नाम नामांतरित भूमिखंड को घर बैठे देख सकते हैं। अफसर और विभागीय कर्मचारी प्रशासनिक आदेश, वेतन वृद्धि ही नहीं बजट आदि भी देख सकते हैं इस ट्रांसपेरेंसी से भ्रष्टाचार में निश्चित कमी आवेगी।

अभी हाल में जयपुर की एक डॉक्टर ने जयपुर की एक कोर्ट में बैठ, वहाँ के सूचना संसाधनों का प्रयोग कर, कोर्ट के निर्देशानुसार अपनी गवाही दर्ज करा ४ दिन का कार्य न केवल १ घंटे में निपटा दिया वरन् सरकारी व्यय जो कि डॉक्टर को टी.ए. आदि के रूप में सरकार को देना पड़ता उसे बचाया। इससे न्याय को भी त्वरित गति मिल सकेगी। हाल में हेडली ने विदेश से ही इसी माध्यम से अपने बयान दर्ज कराए हैं। आगे चलकर संभवतः इस प्रक्रिया को अधिक अपनाया जावे।

डी.एन.ए. जाँच की बात करें तो क्रान्ति ही है कितने ही अपराधी इस तकनीक की सहायता से अंजाम तक पहुँचे हैं, स्थानाभाव के कारण उनका संक्षिप्त वर्णन भी नहीं किया जा सकता।

अपराध की रोकथाम तथा अपराध हो जाने के बाद अपराधी को पकड़ने में सी.सी.टी.वी. के महत्वपूर्ण योगदान को नहीं नकारा जा सकता। ब्रिटेन तथा अमेरिका में इस प्रकार का सॉफ्टवेयर बनाने की कोशिश की जा रही है जो अपराध घटित होने के पहले ही संभाव्य अपराध के बारे में सूचना दे दे। अगर ऐसा होता है तो दृश्य कुछ इस तरह होगा कि एक पुलिस अधिकारी अपनी स्क्रीन के सामने बैठा है। स्क्रीन पर शहर का नक्शा है अचानक उसपर एक स्थल पर लाल निशान आने लगता है जो इस बात का सूचक होगा कि वहाँ घंटे-दो घंटे बाद अपराध घटने वाला है। फिर क्या है वहाँ फोर्स भेज कर अपराध को रोकना भर ही तो है।

कुल मिलाकर यह तय है कि तकनीक का दुरुपयोग न होकर सदुपयोग ही हो तो यह हमारी दृष्टि में वरदान ही है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत'। आज इण्टरनेट के प्रयोग पर आधारित तकनीकी साधन यथा सोशल मीडिया विशेषकर व्हाट्सएप तथा फेसबुक किसी नशे की तरह से आम आदमी की जिन्दगी में स्थान बनाते जा रहे हैं। सुबह उठते ही सबसे पहला कार्य मोबाइल देखने का हो गया है। यह जो स्थिति बनती जा रही है इसके परिणाम अत्यन्त भयावह हैं। इस बात को लेकर विश्व भर के समाजशास्त्री चिंतित हैं। अत्यधिक उपयोग ही सबसे बड़ा दुरुपयोग है। इस लत से नयी पीढ़ी को बचाने हेतु सर्व प्रयास किये जाने चाहिए।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

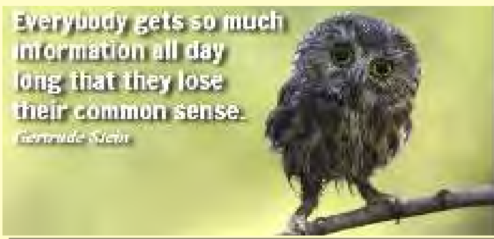

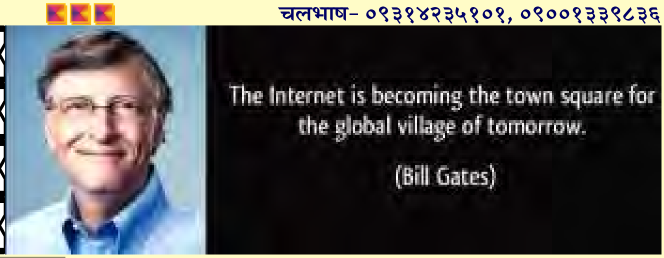

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

दिल से अपने सदा हम करेंगे नमन,
आपके नूर से रोशन है सारा चमन।
सुरभि से आपकी महके सारा गगन,
प्रभु के चरणों में हम करते हैं वन्दन।।

- न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १५ पर देखें।

सोम का न्याय

पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् -ऋ. ७/१०४/१२

वेदों, शास्त्रों, स्मृतियों, इतिहासों, आख्यानों, उपाख्यानों, कथाओं तथा अन्य संस्कृत-साहित्यों का अवधानपूर्वक आलोडन-विलोडन तथा परिशीलन करने के पश्चात् यही निष्कर्ष निकलता है कि जिस व्यवहार से सत्य की रक्षा एवं असत्य का पराभव हो, उसे न्याय कहते हैं। इसी तथ्य को न्यायदर्शन के सुप्रसिद्ध भाष्यकार वात्सायन ने **'प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्यायः'** इस प्रकार परिभाषित किया है। प्रमाण के द्वारा किसी तत्त्व का यथार्थ निरूपण, परीक्षण करना न्याय है। अब यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि प्रमाण इतना विश्वसनीय एवं व्यापक परिमापक है तो पहले यही देखना चाहिए कि प्रमाण क्या वस्तु है? इस विषय में महर्षि गौतम स्वयं अपने न्यायशास्त्र में कहते हैं कि

'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि' – (न्याय. १/१/३)

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, तथा शब्द ये चार प्रमाण हैं। जिनके द्वारा किसी ज्ञातव्य तत्त्व का परीक्षण परि-सर्वतो भाव, ईशन अवलोकन किया जाता है। महर्षि पतंजलि ने भी योगदर्शन में अनुमान के अन्तर्गत ही उपमान का समावेश करते हुए

'प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि' – योग १/७

कहकर तीन प्रमाणों का ही उल्लेख किया है। अस्तु! जो भी हो प्रमाण तीन हों या चार, इतना तो निश्चित है कि प्रमाणों का मुख्य उद्देश्य तत्त्वों का यथार्थ ज्ञान कराना है। इस तत्त्व ज्ञान की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति के निकट दो पक्ष उपस्थित होते हैं। एक 'सत्' तथा दूसरा 'असत्'। इन दोनों में से कौन-सा उचित है, इसका निश्चय करने के लिए वह सोम (विद्वान्, राजा या न्यायाधीश) के पास उपस्थित होता है। उस समय सोम दोनों ही पक्षों का सम्यक् परीक्षण करके 'सत्' की रक्षा करता है तथा 'असत्' को मार देता है। ऋग्वेद का यह मंत्र इसी भाव को अभिव्यक्त करता है-

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत्।।

– ऋ.७/१०४/१२

अर्थात्- अच्छी प्रकार ज्ञान की तह तक पहुँचे हुए मनुष्य के सामने सत् और असत् दोनों प्रकार के वचन अपना विवाद उपस्थित करते हैं। उनमें से जो सत्य है और यदि दोनों सत्य हैं तो सत्यतर है, सोम उसकी तो रक्षा करता है और असत् को मार गिराता है।

वेद के इस मंत्र में न्याय के चाहे जितने ही अर्थ क्यों न होते हों, उन सबका समावेश कर दिया है। इस सत् की रक्षा और असत् के हनन करने वाले व्यक्ति को न्यायकारी कहा जाता है।

इतिहास में भारत में ही नहीं, अपितु अन्य देशों में भी इस प्रकार के न्यायकारी राजा हुए हैं। इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई का न्याय प्रसिद्ध है। वह यह कि विधवा महारानी अहिल्याबाई के इकलौते पुत्र ने कुछ ऐसा अपराध कर दिया, जिस अपराध में सामान्य प्रजा को मृत्यु दण्ड दिया जाता था। उस अपराध से युक्त उनका पुत्र जब उनके सम्मुख न्यायार्थ उपस्थित किया गया तो महारानी ने उसके लिए मृत्यु दण्ड घोषित कर दिया। मन्त्रियों ने बहुत अनुनय-विनय किया कि राजमाता इस प्रकार के दण्ड से कुल का दीपक बुझ जाएगा। तब राजमाता ने गम्भीर वाणी में कहा- 'कुल का दीपक चाहे बुझ जाए, लेकिन न्याय का दीपक नहीं बुझना चाहिए।'

लगभग इसी प्रकार की घटना अरब के खलीफा उमर के साथ भी घटी थी। उनके भी इकलौते पुत्र ने कुछ इसी प्रकार का असदाचरण किया, जिसमें सामान्य प्रजा के अपराधी को सौ कोड़े मारे जाने का दण्ड था। खलीफा उमर ने अपने पुत्र को भी सौ कोड़े मारने का दण्ड दिया।

दण्ड सुनाने के बाद मंत्रियों ने कहा कि बालक कोमल है, दण्ड में न्यूनता की जाए। खलीफा ने लगभग गरजते हुए कहा कि न्याय की तुला जो कहती है, वही होना चाहिए और उनके पुत्र के साथ वही किया गया। कुछ कोड़ों के लगने के पश्चात् पुत्र का देहान्त हो गया। कोड़े लगाने वालों ने कहा कि कोड़ों की संख्या पूर्ण होने से पहले ही कुमार का देहान्त हो गया तो खलीफा ने पुनः दृढ़ता से कहा कि बचे हुए कोड़े उसकी लाश को लगाए जाएँ और ऐसा ही किया गया। इंग्लैण्ड के चतुर्थ हेनरी के युवराज के अभद्र व्यवहार करने पर न्यायाधीश ने युवराज को दण्डित किया। जब इसका समाचार चतुर्थ हेनरी

को मिला तो उन्होंने सगर्व कहा कि जिस देश में इस प्रकार के न्यायाधीश हों, वह देश धन्य है।

भारत में तो सम्राट् विक्रमादित्य का न्याय विश्वविश्रुत है। उनकी 'सिंहासन बत्तीसी' की कथा आज भी लोक में चर्चित है। न्याय कैसा हो, इसके प्रतीक के रूप में तुला (तराजू) का चित्र बनाते हैं, जिसका स्पष्ट अर्थ होता है कि न्यायकर्त्ता की न्यायप्रणाली तुला के डण्डे के समान सीधी होनी चाहिए। चाहे उसमें सोना, चाँदी या मिट्टी ही क्यों न तोली जाए। इसी भाव को महाकवि भारवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है-

गुरुपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्।

- किरात. १/१३

शत्रु या अपना पुत्र कोई भी यदि अधर्माचरण करता है तो निष्पक्ष होकर या तटस्थ होकर उस धर्मविप्लवकारी को दण्डित करना चाहिए।

न्याय के साथ व्यवस्था शब्द सम्बन्धित है। यह व्यवस्था शब्द ही न्याय के फल को प्रकट करता है। इसमें वि+अव+स्था ये तीन शब्द हैं, जिसका सीधा अर्थ है कि कोई भी स्थिति पूर्ण उसी समय मानी जाती है जब वह व्यवस्थित हो। जहाँ न्याय होगा, वहाँ व्यवस्था होगी ही; क्योंकि अन्याय होने पर व्यवस्था तो क्या अव्यवस्था भी नहीं रहती, वहाँ तो होती है भयंकर दुर्व्यवस्था। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में अन्धकार नहीं रह सकता, उसी प्रकार न्यायरूपी सूर्य की उपस्थिति में अव्यवस्थारूपी अन्धकार नहीं रह सकता।

> **"जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में अन्धकार नहीं रह सकता, उसी प्रकार न्यायरूपी सूर्य की उपस्थिति में अव्यवस्थारूपी अन्धकार नहीं रह सकता।"**

वेद में न्याय संस्थापन के लिए असत् को मारना अत्यावश्यक बताया है। इसीलिए तो कहा है कि-

सुविज्ञानं चिकितुषे........सोमोऽवति हन्त्यासत्।।

- ऋ. ७/१०४/१२

इस प्रकरण में इससे पूर्व के मंत्र में भी इसी प्रकार का भाव अभिव्यक्त किया है-

ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः।
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे।।

- ऋ. ७/१०४/६

पदार्थ- (ये) जो लोग (एवैः) बुरे अभिप्रायों से (पाकशंसम्) परिपक्व, सत्यवचन कहने वाले को (विहरन्ते) विरुद्ध मार्ग में ले जाते हैं (वा) अथवा जो (स्वधाभिः) अपने बल, अन्न, गृह के बल से वा वेतनभोगी पुरुषों द्वारा (भद्रं दूषयन्ति) भले आदमी को दूषित करते हैं। (सोमः) शासक, राजा, न्यायाधीश (तान्) उनको (वा) भी (अहये प्रददातु) सर्पादि जन्तु के काटने वा सर्पवत् कुटिलाचार करने के लिए दण्ड दे। (वा) अथवा (तान्) ऐसे पुरुषों को (निःऋते) दुःखदायी जन्तु सिंह, रीछ आदि वा पीड़क के (उपस्थे) समीप (आदधातु) रक्खे।

इसी सूक्त के १३ वें मंत्र में भी सोम को न्याय करने की ही प्रेरणा दी गई है-

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते।।

- ऋ. ७/१०४/१३

पदार्थ- (सोमः) उत्तम शासक (वृजिनम्) असत्य को (न वै उ हिनोति) कभी वृद्धि न होने दे और (मिथुया धारयन्तम्) असत्य के धारक (क्षत्रिययम्) बलशाली पुरुष को भी (न हिनोति) न बढ़ने दे। (रक्षः) दुष्ट पुरुष को (हन्ति) दण्ड दे और (असद् वदन्तं हन्ति) असत्यवादी को दण्ड दे। (उभौ) वे दोनों भी (इन्द्रस्य प्रसितौ) दुष्टों के भयकारी पुरुष के उत्तम बन्धन में (शयाते) डाले जाएँ।

वेद में सोम के इस प्रकार के न्याय करने के मिष से शासकों-प्रशासकों एवं न्यायाधीशों के लिए न्याय करने का मार्ग निर्दिष्ट किया है। यद्यपि लोक में अन्य भी घटनाएँ न्यायपद वाच्य होती हैं; किन्तु वहाँ न्याय शब्द प्रायः प्रकारार्थवाची होता है। जैसे- घुणाक्षर न्याय, काकतालीय न्याय, ब्राह्मणवशिष्ठ न्याय, मत्स्य न्याय, आरण्यक न्याय, अविरविक न्याय, सीलीपुलाक न्याय, गजनिमीलक न्याय, खलकपोत न्याय, तक्रकौण्डिन्य न्याय, अर्धजरती न्याय, देहलीदीप न्याय, जलतुम्बिका न्याय, अन्धपंडु न्याय, गोवलीवर्द न्याय, दग्धरथाश्व न्याय, अशोकवाटिका न्याय इत्यादि। इनमें से अनेक न्यायों के माध्यम से शास्त्रीय विषयों का समाधान कर शास्त्रीयव्यवस्था स्थापित की जाती है। महर्षि पतंजलि ने तो व्याकरण-महाभाष्य में अनेकत्र इनका प्रयोग कर प्रचुर मात्रा में शब्द-साधुत्व दर्शाया है तथा आचार्य पाणिनि के सूत्रों का औचित्य भी।

'न ह्यव्यवस्थाकारिणा शास्त्रेण भवतिव्यम्। शास्त्रेण नाम व्यवस्थाकारिणा भवितव्यम्'।

- व्याकरणमहाभाष्य- ३/१/११

यहाँ मत्स्यन्याय, आरकण्यकन्याय आदि में न्याय शब्द कहा तो जाता है; किन्तु वक्ता का अभिप्राय केवल यही होता है कि वहाँ 'सद्' और 'असद्' का विचार करके निर्णय नहीं किया जाता; अपितु बलवान् जो चाहता है, वही कर लेता है। यह निन्द्य न्याय है, क्योंकि इस न्याय शब्द के साथ व्यवस्था नहीं है या जो व्यवस्था है, उसे हम व्यवस्था नहीं कह सकते, तथापि इन कथनों से न्यायभास अन्याय पर प्रकाश तो पड़ता ही है। व्यवस्था तो न्याय का फल या सार होती है और यहाँ यह व्यवस्था दिखाई नहीं देती।।

- गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोला झाल, मेरठ

जयन्ती पर विशेष

हिन्दू समाज और राष्ट्र का सशक्तिकरण चाहते थे डॉ. अम्बेडकर

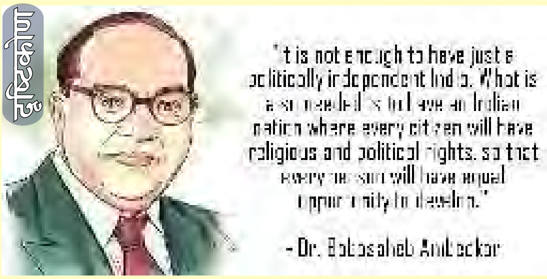

वर्तमान समय में राजनीतिक सुविधा के हिसाब से हर कोई डॉ. अम्बेडकर को अपने अपने तरीके से परिभाषित करने में लगा हुआ है, कुछ उन्हें देवता बनाने में लगे हैं तो कुछ उन्हें केवल दलितों की बपौती मानते हैं और कई उन्हें हिन्दुओं के विरोधी नायक के रूप में रखते हैं। और तो और, भारत के कुछ मार्क्सवादी उन्हें मार्क्स के अग्रदूत के रुप में देखते हैं। कुछ अम्बेडकर के धर्म-परिवर्तन के सही मर्म को समझे बिना ही आज दलितों को हिंदुओं से अलग कर उन्हें एक धर्म के रूप में रखने की माँग करने लगे हैं।

कोई इस पर बात ही नहीं करना चाहता कि डा. अम्बेडकर का पूरा संघर्ष हिंदू समाज और राष्ट्र के सशक्तिकरण का ही था। डॉ. अम्बेडकर के चिन्तन और दृष्टि को समझने के लिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि वे अपने चिन्तन में कहीं भी दुराग्रही नहीं हैं। उनके चिन्तन में जड़ता नहीं है। अम्बेडकर का दर्शन समाज को गतिमान बनाए रखने का है। विचारों का नाला बनाकर उसमें समाज को डुबाने-वाला विचार नहीं है। अम्बेडकर मानते थे कि समानता के बिना समाज ऐसा है, जैसे बिना हथियारों के सेना। समानता को समाज के स्थाई निर्माण के लिये धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में तथा अन्य क्षेत्रों में लागू करना आवश्यक है। डा. अम्बेडकर मानते थे कि धर्म की स्थापनायें जीवन के लिये उत्प्रेरक होती हैं, इसी कारण से वे मार्क्सवाद के पक्ष में नहीं थे।

हिंदू समाज में सामाजिक बदलाव के वाहक थे- अम्बेडकर

भारत के सर्वांगीण विकास और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण विषय हिंदू समाज का सुधार एवं आत्म-उद्धार है। हिंदू धर्म मानव विकास और ईश्वर की प्राप्ति का स्रोत है। किसी एक पर अंतिम सत्य की मुहर लगाए बिना सभी रुपों में सत्य को स्वीकार करने, मानव-विकास के उच्चतर सोपान पर पहुँचने की गजब की क्षमता है, इस धर्म में! श्रीमद्भगवद्गीता में इस विचार पर जोर दिया गया है कि व्यक्ति की महानता उसके कर्म से सुनिश्चित होती है न कि जन्म से। इसके बावजूद अनेक एतिहासिक कारणों से इसमें आई नकारात्मक बुराइयों, ऊँच-नीच की अवधारणा, कुछ जातियों को अछूत समझने की आदत इसका सबसे बड़ा दोष रहा है। यह अनेक सहस्राब्दियों से हिंदू धर्म के जीवन का मार्गदर्शन करने वाले आध्यात्मिक सिद्धान्तों के भी प्रतिकूल है।

हिंदू समाज ने अपने मूलभूत सिद्धान्तों का पुनः पता लगाकर तथा मानवता के अन्य घटकों से सीखकर समय-समय पर आत्म सुधार की इच्छा एवं क्षमता दर्शायी है। सैकड़ों सालों से वास्तव में इस दिशा में प्रगति हुई है। इसका श्रेय आधुनिक काल के संतों एवं समाज सुधारकों स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय, महात्मा ज्योतिबा फुले एवं उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले, नारायण गुरु, गाँधीजी और डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर को जाता है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा इससे प्रेरित अनेक संगठन हिंदू एकता एवं हिंदू समाज के पुनरुत्थान के लिए सामाजिक समानता पर जोर दे रहे हैं। संघ के तीसरे सरसंघचालक बालासाहब देवरस कहते थे कि 'यदि अस्पृश्यता पाप नहीं है तो इस संसार में अन्य दूसरा कोई पाप हो ही नहीं सकता।'

वर्तमान दलित समुदाय जो अभी भी हिंदू है अधिकांश उन्हीं साहसी ब्राह्मणों व क्षत्रियों के ही वंशज हैं, जिन्होंने जाति से बाहर होना स्वीकार किया, किंतु विदेशी शासकों द्वारा जबरन धर्म परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया। आज के हिंदू समुदाय को उनका शुक्रगुजार होना चाहिए कि उन्होंने हिंदुत्व को नीचा दिखाने की जगह खुद नीचा होना स्वीकार कर लिया। हिंदू समाज के इस सशक्तिकरण की यात्रा को डॉ. अम्बेडकर ने आगे बढ़ाया। उनका दृष्टिकोण न तो संकुचित था और न ही वे पक्षपाती थे। दलितों को सशक्त करने और उन्हें शिक्षित

करने का उनका अभियान एक तरह से हिंदू समाज और राष्ट्र को सशक्त करने का अभियान था। उनके द्वारा उठाए गए सवाल जितने उस समय प्रासंगिक थे, आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं कि अगर समाज का एक बड़ा हिस्सा शक्तिहीन और अशिक्षित रहेगा तो हिंदू समाज और राष्ट्र सशक्त कैसे हो सकता है?

वे बार-बार सवर्ण हिंदुओं से आग्रह कर रहे थे कि विषमता की दीवारों को गिराओ, तभी हिंदू समाज शक्तिशाली बनेगा। डॉ. अम्बेडकर का मत था कि जहाँ सभी क्षेत्रों में अन्याय, शोषण एवं उत्पीड़न होगा, वहीं सामाजिक न्याय की धारणा जन्म लेगी। आशा के अनुरूप उतर न मिलने पर उन्होंने १९३५ में नासिक में यह घोषणा की कि वे हिंदू नहीं रहेंगे। अंग्रेजी सरकार ने भले ही दलित समाज को कुछ कानूनी अधिकार दिए थे, लेकिन अम्बेडकर जानते थे कि यह समस्या कानून की समस्या नहीं है। यह हिंदू समाज के भीतर की समस्या है और इसे हिंदुओं को ही सुलझाना होगा। वे समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में जोड़ने का कार्य कर रहे थे।

अम्बेडकर ने भले ही हिंदू न रहने की घोषणा कर दी थी। परन्तु ईसाइयत या इस्लाम से खुला निमंत्रण मिलने के बावजूद उन्होंने इन विदेशी धर्मों में जाना उचित नहीं माना। इसके लिए हम ईसाई या इस्लाम मत के प्रचारकों को दोष नहीं दे सकते क्योंकि वे अपने धर्म का पालन करते हैं और उनकी मानसिकता जगजाहिर है। लेकिन डॉ. अम्बेडकर इस्लाम और ईसाइयत ग्रहण करने वाले दलितों की दुर्दशा को जानते थे। उनका मत था कि धर्मांतरण से राष्ट्र को नुकसान उठाना पड़ता है। विदेशी धर्मों को अपनाने से व्यक्ति अपने देश की परम्परा से टूटता है।

वर्तमान समय में देश ओर दुनिया में ऐसी धारणा बनाई जा रही है कि अम्बेडकर केवल दलितों के नेता थे। उन्होंने केवल दलित उत्थान के लिए कार्य किया। यह सही नहीं होगा। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि उन्होंने भारत की आत्मा हिंदुत्व के लिए कार्य किया। जब हिंदुओं के लिए एक विधि

संहिता बनाने का प्रसंग आया तो सबसे बड़ा सवाल हिंदू को परिभाषित करने का था। डॉ. अम्बेडकर ने अपनी दूरदृष्टि से इसे ऐसे परिभाषित किया कि मुसलमान, ईसाई, यहूदी और पारसी को छोड़कर इस देश के सब नागरिक हिंदू हैं, अर्थात् विदेशी उद्गम के धर्मों को मानने वाले अहिंदू हैं, बाकी सब हिंदू हैं। उन्होंने इस परिभाषा से देश की आधारभूत एकता का अद्भुत उदाहरण पेश किया है।

अम्बेडकर की आर्थिक दृष्टि और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

अम्बेडकर का सपना भारत को महान्, सशक्त और स्वावलंबी बनाने का था। डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में प्रजातंत्र व्यवस्था सर्वोतम व्यवस्था है, जिसमें एक मानव एक मूल्य का विचार है। सामाजिक व्यवस्था में हर व्यक्ति का अपना-अपना योगदान है, पर राजनीतिक दृष्टि से यह योगदान तभी संभव है जब समाज और विचार दोनों प्रजातांत्रिक हों। आर्थिक कल्याण के लिए आर्थिक दृष्टि से भी प्रजातंत्र जरुरी है। आज लोकतांत्रिक और आधुनिक दिखाई देने वाला देश, अम्बेडकर के संविधान सभा में किये गए सतत् वैचारिक संघर्ष और उनके व्यापक दृष्टिकोण का नतीजा है, जो उनकी देख-रेख में बनाए गए संविधान में क्रियान्वित हुआ है, लेकिन फिर भी संविधान वैसा नहीं बन पाया जैसा अम्बेडकर चाहते थे, इसलिए वह इस संविधान से खुश नहीं थे। आखिर अम्बेडकर आजाद भारत के लिए कैसा संविधान चाहते थे?

शिक्षा, रोजगार और आरक्षण

अम्बेडकर चाहते थे कि देश के हर बच्चे को एक समान, अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा मिलनी चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या वर्ग का क्यों न हो। वे संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार बनवाना चाहते थे। देश की आधी से ज्यादा आबादी बदहाली, गरीबी और भुखमरी की रेखा पर अमानवीय और असांस्कृतिक जीवन जीने को अभिशप्त है। इस आबादी की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ही अम्बेडकर ने रोजगार के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने की वकालत की थी। संविधान में मौलिक अधिकार न बन पाने के कारण २० करोड़ से भी ज्यादा लोग बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं। बाबा साहब ने दलित वर्गों के लिए शिक्षा और रोजगार में आरक्षण दिए जाने की वकालत की थी ताकि उन्हें दूसरों की तरह बराबर के मौके मिल सकें। अगर शिक्षा, रोजगार और आवास को मौलिक अधिकार बना दिया जाता तो उन्हें आरक्षण की वकालत की शायद जरूरत ही न होती। डॉ. अम्बेडकर प्रजातांत्रिक सरकारों की कमी से परिचित थे,

इसलिए उन्होंने सधारण कानून की बजाय संवैधानिक कानून को महत्व दिया। वर्तमान में हम देख रहे हैं कि किस प्रकार सरकारें अपने स्वार्थ और वोट-बैंक के लिए कानूनों की मनमानी व्याख्या करना चाहती हैं, इसके लिए हम उत्तर प्रदेश में अतिपिछड़ों और अतिदलितों या आंध्र प्रदेश में मुसलिम आरक्षण और धर्मांतरित ईसाइयों या मुसलमानों के लिए रंगनाथ कमीशन की रिपोर्ट को देख सकते हैं जो सरकारों के हिसाब से तय होते हैं। मजदूर-अधिकारों पर अम्बेडकर का मानना था कि वर्णव्यवस्था केवल श्रम का ही विभाजन नहीं है, यह श्रमिकों का भी विभाजन है। दलितों को भी मजदूर वर्ग के रूप में एकत्रित होना चाहिए। मगर यह एकता मजदूरों के बीच जाति की खाई को मिटा कर ही हो सकती है। अम्बेडकर की यह सोच बेहद क्रांतिकारी है, क्योंकि यह भारतीय समाज की सामाजिक संरचना की सही और वास्तविक समझ की ओर ले जाने वाली कोशिश है।

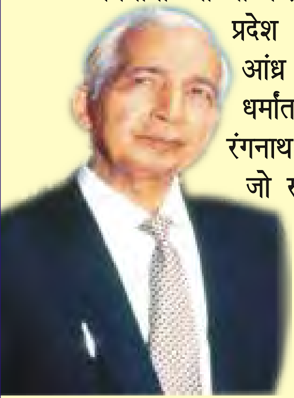

राजनीतिक सशक्तिकरण

अम्बेडकर भारतीय दलितों का राजनीतिक सशक्तिकरण चाहते थे। उसी का नतीजा है कि आज लोकसभा की ७९ सीटें अनुसूचित जातियों के लिए और ४१ सीटें अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित की गई हैं। सरकार ने संविधान संशोधन कर यह राजनीतिक आरक्षण २०२६ तक कर दिया है। शुरू में आरक्षण केवल १० वर्ष के लिए था। यह राजनीतिक आरक्षण इन समूहों का कितना सशक्तिकरण कर पाया है, यह आज के समय का एक बड़ा सवाल है। अपना जनसमर्थन खो देने के डर से कोई भी राजनीतिक दल इस पर चर्चा नहीं करना चाहता।

देखा जाए तो दल-बदल कानून के रहते यह संभव ही नहीं है कि कोई दलित-आदिवासी विधायक या सांसद अपनी मर्जी से वोट कर सके। हमने देखा है कि कुछ साल पहले लोकसभा में दलित-आदिवासी सांसदों ने एक फोरम बनाया था, इन वर्गों के अधिकारों के लिए, पार्टी लाइन से ऊपर उठकर, दल-बदल कानून के कारण वह बेअसर रहा है। अम्बेडकर दूरदर्शी नेता थे उन्हें अहसास था कि इन समूहों को बराबरी का दर्जा पाने के लिए बहुत समय लगेगा, वे यह भी जानते थे कि सिर्फ आरक्षण से सामाजिक न्याय सुनिश्चित नहीं किया जा सकता।

अम्बेडकर का पूरा जोर दलित-वंचित वर्गों में शिक्षा के प्रसार और राजनीतिक चेतना पर रहा है। आरक्षण उनके लिए एक सीमाबद्ध तरकीब थी। दुर्भाग्य से आज उनके अनुयायी इन बातों को भुला चुके हैं। बड़ा सवाल यह है कि स्वतंत्रता के ६७ सालों में भी अगर भारतीय समाज इन दलित-आदिवासी समूहों को आत्मसात नहीं कर पाया है, तो जरूरत है पूरे संवैधानिक प्रावधानों को नई सोच के साथ देखने की, ताकि इन वर्गों को सामाजिक बराबरी के स्तर पर खड़ा किया जा सके। अम्बेडकर का मत था कि राष्ट्र व्यक्तियों से होता है, व्यक्ति के सुख और समृद्धि से राष्ट्र सुखी और समृद्ध बनता है। डॉ. अम्बेडकर के विचार से राष्ट्र एक भाव है, एक चेतना है, जिसका सबसे छोटा घटक व्यक्ति है और व्यक्ति को सुसंस्कृत तथा राष्ट्रीय जीवन से जुड़ा होना चाहिए। राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए अम्बेडकर व्यक्ति को प्रगति का केद्र बनाना चाहते थे। वह व्यक्ति को साध्य और राज्य को साधन मानते थे।

डॉ. अम्बेडकर ने इस देश की सामाजिक-सांस्कृतिक वस्तुगत स्थिति का सही और साफ आंकलन किया है। उन्होंने कहा कि भारत में किसी भी आर्थिक-राजनीतिक क्रांति से पहले एक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति की दरकार है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी अपनी विचारधारा में 'अंत्योदय' की बात कही है। अंत्योदय यानि समाज की अंतिम सीढ़ी पर जो बैठा हुआ है, सबसे पहले उसका उदय होना चाहिए। राष्ट्र को सशक्त और स्वावलंबी बनाने के लिए समाज की अंतिम सीढ़ी पर जो लोग हैं उनका 'सोशियो इकोनामिक डेवलपमेंट' करना होगा। किसी भी राष्ट्र का विकास तभी अर्थपूर्ण हो सकता है जब भौतिक प्रगति के साथ-साथ आध्यात्मिक मूल्यों का भी संगम हो। जहाँ तक भारत की विशेषता, भारत का कलचर, भारत की संस्कृति का सवाल है तो यह विश्व की बेहतर संस्कृति है। भारतीय संस्कृति को समृद्व और श्रेष्ठ बनाने में सबसे बड़ा योगदान दलित समाज के लोगों का है। इस देश में आदि कवि कहलाने का सम्मान केवल महर्षि वाल्मीकि को है, शास्त्रों के ज्ञाता का सम्मान वेदव्यास को है। भारतीय संविधान के निर्माण का श्रेय अम्बेडकर को जाता है।

वर्तमान में कुछ देशी-विदेशी शक्तियाँ हमारी इन सामाजिक-संस्कृतिक धरोहरों को हिन्दुत्व से अलग करने की योजनाएँ बना रही हैं। अब कुछ लोगों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है कि डॉ. अम्बेडकर ने मार्क्स के विचारों का विस्तार किया है। उन्होंने समाज परिवर्तन की मार्क्ससियन प्रणाली में कुछ नई बातें जोड़ी हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। वे भूल जाते हैं कि मार्क्स का दर्शन केवल दो तीन सौ साल पहले का है। मार्क्स प्रणीत व्यवस्था में जहाँ मुट्ठी भर

धनपति शोषक की भूमिका में उभरता है वहीं जाति और नस्लभेद व्यवस्था में एक पूरा का पूरा समाज शोषक तो दूसरा शोषित के रुप में नजर आता है। जिसका समाधान अम्बेडकर सशक्त हिंदू समाज में बताते हैं क्योंकि वह जानते थे कि हिंदू धर्म न तो इसे मानने वालों के लिए अफीम है और न ही यह किसी को अपनी जकड़न में लेता है। वस्तुतः यह मानव को पूर्ण स्वतंत्रता देने वाला है। यह चिरस्थायी रुप से विकास, संपन्नता तथा व्यक्ति व समाज को संपूर्णता प्रदान करने का एक साधन है। शायद मार्क्सवादियों को एक भारतीय नायक की जरुरत है और अम्बेडकर से अच्छा नायक उन्हें कहाँ मिलेगा, इसलिए वह अम्बेडकर का पेटेंट करवाने में जुट गए हैं। डॉ. अम्बेडकर के पास भारतीय समाज का आँखों देखा अनुभव था, तीन हजार वर्षों की पीड़ा भी थी। इसलिए अम्बेडकर सही अर्थों में भारतीय समाज की उन गहरी वस्तुनिष्ठ सच्चाइयों को समझ पाते हैं, जिन्हें कोई मार्क्सवादी नहीं समझ सकता।

अम्बेडकर का सपना था कि समतामूलक समाज हो, शोषणमुक्त समाज हो। दरअसल आज उनका यही सपना सबसे ज्यादा प्रासंगिक है और इसी के कारण अम्बेडकर भी सबसे ज्यादा प्रासंगिक हैं। उनके समूचे जीवन और चिंतन के केंद्र में यही एक सपना है। एक जातिविहीन, वर्गविहीन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, लैंगिक और सांस्कृतिक विषमताओं से मुक्त समाज। ऐसा समाज बनाने के लिए हिंदू समाज का सशक्तीकरण सबसे पहली प्राथमिकता होगी। यही अम्बेडकर की सोच और संघर्ष का सार है। आज अम्बेडकर इस देश की संघर्षशील और परिवर्तनकारी समूहों के हर महत्वपूर्ण सवाल पर प्रासंगिक हो रहे हैं, इसी कारण वह विकास के लिए संघर्ष के प्रेरणास्रोत भी बन गए हैं। मेरा मानना है कि हिंदुत्व के सहारे ही समाज में एक जन-जागरण शुरू किया जा सकता है। जिसमें हिंदू अपने संकीर्ण मतभेदों से ऊपर उठकर स्वयं को विराट्-अखंड हिन्दुस्तानी समाज के रूप में संगठित कर भारत को एक महान् राष्ट्र बना सकते हैं।

Writer- R.L Fransis,
President
Poor Christian liberation movement
(साभार- अन्तर्जाल)

वैदिक परिवार शिविर २० मई से २२ मई २०१६

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में वैदिक परिवार शिविर का आयोजन २० से २२ मई २०१६ तक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री के निर्देशन में किया जा रहा है। इस अवसर पर विशेष प्रशिक्षण देने के लिए स्वामी सुधानन्द जी, योग गुरु उमाशंकर शास्त्री, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री केशव देव शर्मा उपस्थित रहेंगे।

- ☆ शिविर आवासीय है तथा इसमें केवल दम्पति भाग ले सकेंगे और १९ मई की शाम तक उन्हें नवलखा महल, उदयपुर पहुँचना होगा।
- ☆ सभी इच्छुक संभागियों को अपना पंजीयन दिनांक ५ मई २०१६ तक कराना होगा।
- ☆ पंजीयन शुल्क प्रति व्यक्ति १००.०० रु. देय होगा।
- ☆ संभागीगण पूर्वानुमति से ही भाग ले सकेंगे।
- ☆ आवास व भोजन व्यवस्था न्यास की ओर से निःशुल्क की जावेगी।
- ☆ स्थानीय दम्पति भी लाभ की दृष्टि से इस शिविर में आमंत्रित हैं। उन्हें प्रातः ६.०० बजे से रात्रि ६.३० तक शिविर में, शिविर के अनुशासन में रहते हुए भागीदारी निभानी होगी।

सम्पर्क सूत्र- नारायण मित्तल, संयोजक
मोबाइल नं. ९४१४१६९४४०

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

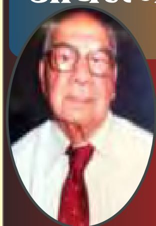

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- ☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- ☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- ☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- ☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- ☞ १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- ☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- ☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- ☞ वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- ☞ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- ☞ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- ☞ पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अक्षर विज्ञान

प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

> **"वर्णों की संख्या ६४ का आधार चौंसठ अध्यायों वाला ऋग्वेद है।"**

मानवीय सभ्यता संस्कृति-ज्ञान और विज्ञान का आदिस्रोत वेद है। भारतीय मनीषी अपनी सारस्वत साधना का उद्‌गम स्थल वेद को मानते हैं। महर्षि मनु ने **'सर्वज्ञानमयो हि सः'** (मनु.२।७) तथा **'वेदोऽखिलो धर्ममूलं'** (मनु. २।६) कहकर भगवान वेद को ही समस्त-ज्ञान-विज्ञान का मूल स्वीकार किया है।

ऋग्वेद वाणी के विषय में कहता है-

जन्म जन्मान्तरों में गमनशील जीवात्मा वाणी को (शब्दों को) मन की सहायता से धारणा करता है। मन के अंदर अनभिव्यक्त उस वाणी को प्राणवायु प्रकाशित करता है। उस हितकारिणी आत्मेच्छा से जनित वाणी को ऋषि आदि मेधावीजन अध्ययन-अध्यापन से ऋत (सत्य या ज्ञान) के पद (स्थान) में भलीभाँति रक्षा करते हैं।

पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति तां गन्धर्वोऽवदद्गर्भे अन्तः।
तां द्योतमानां स्वर्यं मनीषामृतस्य पदे कवयो नि पान्ति।।

- ऋग्वेद १०।१७७।२

बाद दिया गया है। प्रथमतः शुद्ध स्वर- अ, इ, उ; पुनः अन्य स्वर ऋ, लृ; तत्पश्चात् संयुक्त स्वर- ए, ओ, ऐ, औ। इनके ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत् भेद पुनः सानुनासिक और निरनुनासिक भेद बताये गये हैं। व्यंजन वर्णों का विवरण या उपस्थापन पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। समग्र कण्ठ्य वर्ण (क, ख, ग, घ, ड.) एक साथ कवर्ग नाम से, समग्र तालव्य वर्ण (च, छ, ज, झ, ञ्) एक साथ चवर्ग नाम से; समग्र मूर्धन्य वर्ण (ट, ठ, ड, ढ, ण) एक साथ ढ वर्ग नाम से, समग्र तालव्यवर्ण (त, थ, द, ध, न) एक साथ त वर्ग नाम से; तथा समग्र ओष्ठ्य वर्ण (प, फ, ब, भ, म) एक साथ पवर्ग नाम से अनुक्रमित, विवृत या अध्यापित किया जाता है। तत्पश्चात् अन्तःस्थ और उष्म वर्णों की प्रस्तावना है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

- ऋग्वेद १।१६४।३९

अक्षरेण मिमते सप्त वाणीः। - अथर्ववेद ६।१०।२

इन मंत्रों के आलोक में पाणिनि प्रभृति वैयाकरणों ने माहेश्वर सूत्रों में वैदिक और संस्कृत भाषा का सम्पूर्ण 'वर्ण-समाम्नाय' सन्निविष्ट किया। ज्ञातव्य है कि माहेश्वर सूत्र पाणिनि की उपज्ञा नहीं हैं। ये भगवान् (ऐतिहासिक) शिव या महेश्वर के उपदिष्ट सूत्र हैं, जिन्हें पाणिनि ने यथावत् ग्रहण कर लिया (द्रष्टव्य- 'संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास'- पंडित युधिष्ठिर मीमांसक)। संसार की किसी भाषा के वर्ण समाम्नाय का ऐसा वैज्ञानिक प्रस्तवन नहीं पाया जाता। स्थान, करण और प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों (वर्णों) को वर्गीकृत करके पाणिनि ने इन १४ (चौदह) सूत्रों में प्रस्तुत कर दिया है। कहना न होगा कि वैदिक-संस्कृत भाषा के वर्ण समाम्नाय का ऐसा वैज्ञानिक वर्गीकरण किसी भी भाषा में नहीं पाया जाता। पाठक अंग्रेजी के वर्णक्रम A, B, C, D, और वर्णों की २६ (छब्बीस) संख्या तथा उर्दू के अलिफ, बे, पे, ते, से तथा अक्षरों की ३८ संख्या से स्वयं तुलनात्मक अध्ययन करके उपर्युक्त निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं।

इसी मंत्र के आधार पर श्लोकात्मक पाणिनीय शिक्षा में शब्दोत्पत्ति के प्रकार का सुन्दर वर्णन किया गया है-

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युङ्.क्ते विवक्षया
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्।।
मारुतस्तूरसि चरन् मन्द्रं जनयति स्वरम्।। - श्लोक पा. शिक्षा-६,७

अर्थात् कहने की इच्छा से जीवात्मा अर्थों को बुद्धि से इकट्ठा कर मन को प्रेरित करता है। मन कायाग्नि (जठराग्नि) को प्रेरित करता है। मनःप्रेरित अग्नि वायु को उद्‌बुद्ध करके उरः स्थान की ओर उठता हुआ कंठबित्य को प्राप्त कर गंभीर ध्वनि (नादध्वनि) को उत्पन्न करता है।

पाणिनि-शिक्षा में **'वर्णास्त्रिषष्टिः' 'चतुःषष्टिरित्येके'** कहा गया है।। अर्थात् वर्णों की संख्या तिरसठ (६३) या चौसठ (६४) है। वर्णों की संख्या ६४ का आधार चौंसठ अध्यायों वाला ऋग्वेद है। ऋग्वेद में आठ (८) अष्टक हैं और प्रत्येक अष्टक में आठ (८) अध्याय हैं। 'कामशास्त्र' में 'काम' की ६४ कलाओं का आधार चतुःषष्टि (६४) अध्यायात्मक ऋग्वेद को माना गया है।

६३ या ६४ वर्णों का विवरण 'शिक्षा' नामक वेदांग में मिलता है। स्वर वर्णों का प्रथमतः तथा व्यंजन वर्णों का विवरण उसके

एसोसियेट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
रणवीर रणंजय महाविद्यालय,अमेठी(उत्तरप्रदेश)

घर के अन्दर बैठे आतंकियों का क्या होगा?

-शिवदेव आर्य

भारतवर्ष का अपना निराला ही रूप दिखायी देता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि - यह एक मतनिरपेक्ष देश है, जिसको लोग धर्मनिरपेक्ष भी कह देते हैं। जहाँ धर्मनिरपेक्षता की आड़ में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को बिगाड़ने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है।

ऐसा ही कुछ ६ फरवरी २०१६ को हुआ, शायद आपको यह सारा वृत्त ज्ञात होगा कि इस दिन क्या कुछ हुआ-६ फरवरी को जे.एन.यू. में वामपन्थी और दलित संगठनों से जुड़े छात्रों ने संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरु की बरसी मनाई, इसमें कश्मीर के छात्र शामिल थे। इसके लिए कैंपस में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया था। इस दौरान देश विरोधी नारे भी लगाए गये।

यह सच जानकर प्रत्येक भारतीय को बहुत दुःख हुआ होगा कि- ६ फरवरी को ही हनुमनथप्पा जो जे.एन.यू. के समीपस्थ ही सेना के अस्पताल में देश के लिए अपनी आखरी सांस ले रहे थे। जहाँ समूचा देश एकजुट होकर उनके जीवन के लिए प्रार्थना व हवन कर रहा था, वहीं देश को एक नई दिशा व दशा देने वाला तथाकथित वर्ग ऐसे सिपाही के बलिदान को कुछ नहीं समझ रहा था अपितु वह तो आतंकी गतिविधियों को बढावा देने वाले को श्रद्धांजलि दे रहा था। संसद पर अफजल गुरु ने जो हमला किया यदि वह हमला जे.एन.यू. में हुआ होता तब शायद वहाँ के लोगों की आँखे खुली होतीं। जहाँ संसार भर में इस कृत्य की निन्दा हुयी, वहीं संसद हमले के समय संसद में फसे हुए कुछ तथाकथित सांसद भी इस राष्ट्रदोही कृत्य का अनौपचारिक समर्थन कर रहे हैं।

हम सभी जानते हैं कि देश में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश की छवि धूमिल करने की पूरी कोशिश की जा रही है। अभी हाल की ही घटना है कि भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली के समर्थक को लाहौर में अपनी छत पर भारतीय ध्वज फहराने पर २४ घण्टे के अन्दर-ही-अन्दर १० साल की सजा दे दी जाती है।

आज-कल हम कश्मीर के विभिन्न भागों में तिरंगा जलाने और पाकिस्तानी तथा आई.एस. के झण्डे फहराने की घटनाएँ लगभग प्रत्येक दिन सुन व देख रहे हैं, ऐसे में सरकार के शान्त रहने से दिल्ली में इनके इतने हौसले बढ़ गए कि उन्होंने अफजल गुरु की फांसी के विरोध में कार्यक्रम आयोजित कर दिया और यूनिवर्सिटी को पता तक न चला, ये बेहद आश्चर्य को दर्शाता है। यह सचमुच बहुत ही शर्मसार कर देने वाला कृत्य है। क्या यह देशद्रोह नहीं है? इससे बढ़कर और आतंकी होने की कसौटी क्या हो सकती है? अफजल गुरु जैसे आतंकवादियों से सहानुभूति रखना देशद्रोह नहीं तो और क्या है? यह कोई छोटी घटना नहीं है, अपितु इसे एक योजनाबद्ध तरीके से कार्यरूप दिया गया है। क्योंकि बाहरी आतंकी शक्ति तो अपने आप ही कमजोर होती जा रही है। इसीलिए घर के अन्दर बैठे लोगों को ही आतंकी बनाने की जोर-शोर से तैयारी चल रही है।

इन विरोधी छात्रों का आतंकवादी संगठन खुलेआम समर्थन कर रहे हैं। जे.एन.यू. में राष्ट्रविरोधी नारेबाजी को आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख हाफिज सईद का खुला समर्थन प्राप्त हो रहा है। सईद ने कथित तौर पर ट्वीट कर पाकिस्तानियों से जे.एन.यू. छात्रों के प्रदर्शन का समर्थन करने की अपील की थी।

सरकार को ऐसे कृत्य के लिए कड़ी से कड़ी कारवाई करनी चाहिए कि कल को कोई और ऐसा करने का विचार मन में भी न ला सके।

दिल्ली तो क्या देश के किसी भी कोने में देशद्रोहियों के समर्थन में किसी को आवाज ऊँची करने की हिम्मत नहीं होनी चाहिए। शाहरुख खान, आमिर खान और करण जौहर जैसे कई तथाकथित बुद्धिजीवियों से पूछना चाहता हूँ, जिन्होंने असहिष्णुता को लेकर देश की छवि खराब की और उन तथाकथित कलम बेचूँ साहित्यकारों से जिन्होंने राष्ट्रिय पुरस्कार व सम्मान लौटाए सभी कि वे बताएँ कि एक यूनिवर्सिटी में आतंकवादियों का समर्थन करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना कहाँ तक सही है? अब इन लोगों की आत्मा क्यों नहीं रो रही है? अब सबकी बोलती क्यों बन्द है? अब ये चांडाल चौकड़ी 'गो इण्डिया गो बैक, भारत की बरबादी तक जंग रहेगी जारी, कश्मीर की आजादी तक जंग रहेगी जारी, अफजल हम शर्मिन्दा हैं तेरे कातिल जिन्दा हैं, तुम कितने अफजल मारोगे, हर घर में अफजल निकलेगा, अफजल तेरे खून से इन्कलाब आयेगा' के नारों के विषय में क्या कहेंगे?

यह भारत ही है जहाँ इतना सब कुछ होने पर भी अभी तक कार्यवाही के नाम पर केवल गिरफ्तारी ही की गयी है। दिल्ली में इतना कुछ हो गया पर अब तक सब कुछ सहन किया जा रहा है। परन्तु यदि अलगाववादी कश्मीरियों या मुसलमानों के मामले पर कोई प्रदर्शन होता तो हमारे यहाँ इसे असहिष्णुता का नाम दिया जाता। यह भारत ही है, जहाँ सब कुछ चलता है क्योंकि हम सहिष्णु हैं। हम उन लोगों में से नहीं है जो भूल जायें कि अफजल गुरु ने भारतीय संसद पर हमला किया और फिर ११ साल तक केस चला तब जाकर २०१३ में उसे फांसी की सजा दी गई, इस हमले को विफल करने वाले अपने उन ११ जवानों के बलिदान को कैसे भूला सकते हैं।

समय है कि इन दिनों देशद्रोहियों के खिलाफ तुरन्त एक्शन लिया जाना चाहिए। सवाल यूनिवर्सिटी प्रशासन की चुप्पी का नहीं है अपितु सरकार कब बड़ा कदम उठायेगी यह है। इस मामले में दिल्ली वालों को एकजुट होकर देशद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए नई क्रान्ति लानी होगी। यही समय की माँग है।

लोकतन्त्र में सरकार को, व्यवस्था को, प्रधानमन्त्री को, मन्त्रियों को, राजनीतिक पार्टियों आदि को बुरा-भला कहने की बात तो समझी जा सकती है, उस का समर्थन भी किया जा सकता है किन्तु अपनी ही जन्म-भूमि का अहित करने की सोच रखने वाले कुछ भी हो सकते हैं किन्तु मनुष्य तो निश्चित ही नहीं हो सकते। जो अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर देशद्रोह का समर्थन करते हैं, उनकी मानसिकता की जाँच कराना हम सबका मौलिक कर्तव्य होना चाहिए।

राष्ट्र महान् है तथा राष्ट्र सर्वोपरि है, राष्ट्रद्रोही तत्वों को निर्मूल करना राजा का परम कर्तव्य है। यही राजा का राजधर्म है।

देशद्रोही अथवा शत्रुपक्ष से मिले हुए के लिए दण्ड का विधान चाणक्य नीति में इस प्रकार प्राप्त होता

है कि -

'दुष्याः तेषुधर्मरुचिपां सुदण्डम् प्रयुजीत' (५/४)

अर्थात् देशद्रोह करने वाले का सर्वनाश कर देना चाहिए। यही इन कुकृत्य करने वालों के साथ करना चाहिए।

ऋग्वेद स्पष्ट शब्दों में आदेश देता है -

'अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः।

- ऋग्वेद १०/८३/३

अर्थात् जो समाज में दस्यु कर्म, सुख-शान्ति में बाधा डालने वाले हैं, उनको नष्ट कर देना चाहिए।

ऐसे विकराल काल में राजा को कठोर निर्णय लेना चाहिए, जिसके लिए ऋग्वेद के १० वें मण्डल में आदेश दिया गया है-

ये नः .... उग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन्। (१०/१२८/६)

देशद्रोही को कठोर से कठोर दण्ड के लिए यजुर्वेद के ३६ वें अध्याय में कहा है कि -

उग्रं लोहितेन मित्रंꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। - यजुर्वेद ३६/६

ऐसे दुष्ट पापाचारियों तथा देशद्रोहियों के लिए मनु महाराज का विधान है कि -

'दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति' - मनु.-७/१८

अर्थात् दण्ड ही प्रजा को व्यवस्थित रखता है और दण्ड ही सभी की रक्षा करता है। अतः प्रशासन को इन कुकृत्यों के खिलाफ देशद्रोह का अभियोग चलाना चाहिए और कठोरतम दण्ड देना चाहिए।

यदि प्रशासन इस कार्य को करने में असमर्थ हो तो प्रत्येक भारतीय को अपनी भारतीयता को दिखाते हुए रतन टाटा के समान देश की प्रत्येक गतिविधियों से इन जे.एन.यू में पल रहे आतंकवादी कम्यूनिटों का बहिष्कार करना चाहिए।

आज प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यकता है कि वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि की क्षुद्र मानसिकता से ऊपर उठकर अपने को भारतीय बनाने का यत्न करना चाहिए। यही ऐसी समस्या का हल है अन्यथा आज एक ऐसी घटना हुयी कल को सर्वत्र यही दृश्य दिखायी देंगे।

अब हम कैसा चाहते हैं, सोचने की बात है?

- गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
चलभाष- ०८८१०००५०९६

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आया नववर्ष करें संकल्प

शाम लाल कौशल

संसार में अनेक देशों की तरह भारत में भी हर बार नया साल बहुत उत्साह, मस्ती तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। नये वर्ष पर पहले तो ग्रीटिंग कार्डों का आदान प्रदान होता था लेकिन आजकल एस.एम.एस. का आदान प्रदान होने लगा है। नये साल के जश्न मनाये जाते हैं, लोग परिवार के सदस्यों के साथ महंगे-महंगे होटलों में नाच गाने के बाद डिनर करते हैं। कुछ लोग नये साल के शुभागमन पर संकल्प करते हैं। हमारे समाज में संकल्प करना हजारों सालों से एक परम्परा रही है। कुछ लोग नववर्ष पर अपने बिजनेस में और ज्यादा तरक्की करने का संकल्प लेते हैं। योजनाएँ बनाते हैं, साधनों को एकत्रित करने तथा निवेश करने के बारे में खाका तैयार करते हैं। कुछ अन्य लोग शराब छोड़ने के लिए संकल्प करते हैं। यूँ तो शराबी लोग हर रात शराब पीने से पहले अपने आपको यह कहकर शराब छोड़ने का संकल्प करते हैं, बस आज, आज ही थोड़ी सी पी लेता हूँ। कल से मेरी तथा मेरे बाप की भी शराब पीने से तौबा। लेकिन साहब वह वायदा ही क्या जो वफा हो गया। वायदे तो किए ही जाते हैं तोड़ने के लिए और शराबियों ने तो न जाने शराब छोड़ने के लिए कब-कब और कितने-कितने संकल्प अपनी माँ, बीबी, बहन, भाई तथा दोस्तों से किए होंगे। मैं समझता हूँ कि नववर्ष पर पति-पत्नी को मिल बैठकर संकल्प करना चाहिए कि वे आपस में कभी झगड़ा नहीं करेंगे, एक दूसरे से कुछ छुपायेंगे नहीं, एक दूसरे की इज्जत करेंगे, किसी तीसरे में दिलचस्पी नहीं दिखायेंगे, घर के बुजुर्गों की इज्जत करेंगे तथा बच्चों के सामने कलह-क्लेश करके उन्हें गलत शिक्षा नहीं देंगे। अगर ऐसा होता है तो घर खुशियों से भरपूर होगा और घर स्वर्ग बन जायेगा।

नववर्ष पर हमारे राजनेताओं को भी संकल्प करना चाहिए कि वे मन, कर्म और वचन से जन प्रतिनिधि के तौर पर ही व्यवहार करेंगे, भ्रष्ट तरीकों से तौबा करेंगे, संसद की मर्यादा बनाये रखेंगे, एक दूसरे पर छींटाकशी नहीं करेंगे, सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का समर्थन करेंगे, विरोध के लिए विरोध नहीं करेंगे। देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, क्षेत्रीयवाद तथा भाषावाद नहीं फैलने देंगे, सदन में नियमित तौर पर हाजिर होकर इसकी कार्यवाही में हिस्सा लेंगे। अगर ऐसा होता है तो हमारे देश का लोकतंत्र सारे विश्व के लिए एक आदर्श बन जायेगा। क्या हमारे राजनेता नववर्ष पर सचमुच ही ऐसा संकल्प ले सकेंगे?

एक संकल्प हमारे देश के टी.वी. चैनलों को भी करना चाहिए। हमारे देश में इस समय लगभग ५०० टी.वी. चैनल्स चल रहे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन, जानकारी तथा समाचारों के द्वारा, बीच-बीच में विज्ञापनों द्वारा अरबों रुपये कमाना ही है। ये टी.वी. चैनल बेशक इस प्रकार धन कमायें लेकिन आम दर्शकों को दिखाये जाने वाले कार्यक्रमों तथा समाचार प्रसारित किए जाने वाले तरीकों में शालीनता, सभ्यता, गरिमा, भारतीय परम्परा तथा नैतिकता का इतना तो ध्यान रखें कि हम परिवार के सभी सदस्य, बड़े, बूढ़े, स्त्री-पुरुष तथा बच्चे मिल बैठकर इनका आनन्द उठा सकें। टी.वी. सीरियल मनोरंजक, शिक्षाप्रद तथा जानकारी बढ़ाने वाले होने चाहिए। उनमें हिंसा, हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती, अपहरण, बड़ों तथा महिलाओं के प्रति आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाया हुआ दिखाना चाहिए। वे अनावश्यक तौर पर लम्बे तथा उबाऊ नहीं होने चाहिए। समाचार हमें डराने या आतंकित करने के लिए नहीं बल्कि जानकारी देने के लिए ही प्रसारित हों। अगर कहीं ऐसा हो पाये तो टी.वी. देखना सचमुच ज्यादा उपयोगी हो जायेगा।

एक संकल्प प्रतिभा खोज करने वाले संगठनों को भी करना चाहिए। कृपया इससे सम्बन्धित कार्यक्रमों का प्रदर्शन तथा संचालन इस तरह करें कि युवाओं में अनैतिकता, छिछोरापन, चरित्रहीनता तथा नंगापन न आये। इस प्रकार के आयोजनों में अपनी बेटी के प्रतिभा प्रदर्शन पर उसके पिता को गर्व तो महसूस हो पर शर्म नहीं आये। नववर्ष पर संकल्प या वायदे तो किए जाते हैं लेकिन निभा पाना सबके बस की बात नहीं होती तभी तो एक फिल्मी गाने में मन्ना डे ने कहा है-

कस्में, वादे, प्यार, वफा सब बातें हैं, बातों का क्या ?

मकान नं ९७५-बी/२०
राजीव निवास, शक्ति नगर
ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१ (हरि.)

प्रायः समर्थ , शिक्षित लोगों के इर्द-गिर्द बहुत कुछ ऐसा होता रहता है जो समाज तथा राष्ट्र के लिए घातक होता है परन्तु हम केवल यह सोच कर रह जाते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले की छोटी सी परन्तु खूबसूरत वादी से घिरे गाँव में जन्मी, देवी किंकरी हमारे समक्ष एक मिसाल के रूप में उपस्थित होती हैं, जो तत्कालीन समाज में अस्पृश्य तथा दलित समुदाय से थीं, नितांत अनपढ़ थीं परन्तु सामजिक चेतना तथा हौंसला उनमें गजब का था।

निम्न समझे जाने वाले समुदाय में जन्म लेना, अल्पायु में विधवा होना, गरीबी की मार झेलना कुछ भी तो इस महिला के कदम नहीं रोक सका और मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने हस्ताक्षर सीखने वाली इस अशिक्षित महिला ने अपने चारों ओर बेदर्दी के साथ 'लाइम स्टोन' का खनन करने वालों की नाक में सफलता पूर्वक नकेल डाल कर समाज के समक्ष एक ऐसा उदाहरण रखा कि अगर बुराइयों के खिलाफ दृढ़ इरादे से जंग छेड़ी जाय तो कोई ऐसा कारण नहीं कि सफलता न मिले।

किंकरी देवी का जन्म १९२५ में हिमाचल के एक गाँव घाटोन के एक दलित परिवार में हुआ। पिता एक बहुत छोटे किसान थे। किंकरी ने छोटी आयु में मजदूरी करना प्रारम्भ कर दिया। १४ वर्ष की आयु में किंकरी का विवाह शामूराम नामक एक बंधुआ मजदूर से हुआ। अभी तो भाग्य ने किंकरी पर और जुल्म ढ़ाने थे। २२ वर्ष की आयु में टायफायड के कारण शामूराम ने दम तोड़ दिया। जीविका चलाने हेतु किंकरी देवी ने स्वीपर के रूप में काम करना प्रारम्भ कर दिया।

पर्यावरण को सुरक्षित करने के उद्देश्य से दूनघाटी में खनन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था परन्तु सिरमौर जिले के खनन माफिया के हौंसले बुलंद थे। यद्यपि किंकरी देवी अनपढ़ थीं परन्तु इस खनन के परिणामस्वरूप होने वाले दुष्परिणामों से वे अनभिज्ञ नहीं थीं। घटता हुआ जंगल, प्रदूषित पानी, और परिणामस्वरूप खेती के लिए उपलब्ध भूमि की तथा जलाने के लिए होती जा रही लकड़ी की कमी को उन्होंने अनुभव किया। अवैध खनन उनके गाँव की हरी-भरी वादी में बदसूरत दाग छोड़ते जा रहे थे। खनन माफिया से कौन पंगा ले? परन्तु किंकरी देवी ने इस खनन माफिया के मूलोच्छेद का निश्चय किया। वे नहीं जानतीं थीं कि ऐसा कैसे हो सकेगा? उन्होंने एक NGO 'पीपल्स एक्शन फार पीपल इन नीड' (People's action for people in need) की मदद ली और हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय शिमला में इस खनन को रोकने हेतु एक जनहित याचिका दायर की परन्तु उच्च न्यायालय ने व्यस्तता के कारण इस याचिका पर सुनवायी नहीं की। तब किंकरी देवी ने शिमला जाकर न्यायालय के समक्ष १९ दिन का अनशन कर आखिर न्यायालय का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर दिया और उच्चतम न्यायालय ने ४८ कंपनियों को खनन बंद कर देने के आदेश दे दिए। यद्यपि बाद में कुछ प्रतिबन्ध मात्र ही लगाए गए। १९९५ में उच्चतम न्यायालय द्वारा खान मालिकों की याचिका रद्द कर दी गई।

परन्तु किंकरी देवी की इस समय तक पर्यावरणविद् के रूप में पहचान हो चुकी थी। स्वयं हिलेरी क्लिंटन ने उनमें रुचि ली। उन्हें बीजिंग में हुयी चौथी 'विश्व महिला कांफ्रेंस' में बुलाया गया। वहाँ उद्घाटन के समय दीप प्रज्ज्वलन उनके द्वारा कराया गया। उन्होंने अपनी बात भी वहाँ रखी। १९९९ में उन्हें 'रानी झाँसी महिला शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

किंकरी देवी का दृढ़ विश्वास था की लड़कियों का पढ़ना अत्यावश्यक है। उन्हीं के संघर्ष के फलस्वरूप 'संग्रह' में आज महिला विश्वविद्यालय है। जीवन भर समाज के लिए लड़ने वाली इस महान् महिला ने २००७ में ८२ वर्ष की आयु में चंडीगढ़ में अपनी अंतिम श्वांस ली। आज किंकरी देवी जीवित नहीं हैं परन्तु उनका संघर्ष लाखों को प्रेरणा देने की सामर्थ्य रखता है ।

सेतुबन्धान के यान्त्रिक साधन

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

“ रामसेतु का निर्माण श्री राम की सेना द्वारा कुशल अभियन्ता नल और नील के निर्देशन में यान्त्रिक साधनों की मदद से इन्जीनियरिंग के सिद्धान्तों के अनुरूप किया गया। रामायण कालीन अद्भुत भारतीय शिल्प-कला का दिग्दर्शन वाल्मीकि रामायण में विस्तार से मिलता है।”

हस्तिप्रायान् महाकायाः पाषाणांश्व महाबलाः।
पर्वतांश्च समुत्पाटय यन्त्रैः परिवहन्ति च।। - युद्धकांड २२/८६

अर्थात् हाथी के समान बड़े-बड़े पत्थर और शैल-खण्ड (पहाडों के टीले) जड़मूल से उखाड़कर बड़े-बड़े डील डौल वाले वानरवीर यंत्रों द्वारा उन्हें ढो रहे थे। इस श्लोक में ‘समुत्पाटय’ और ‘यन्त्रैः’ यह दोनों शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं। महर्षि वाल्मीकि यहाँ ‘खनित्वा’ ऐसा शब्द प्रयोग नहीं करते, किन्तु ‘समुत्पाटय’ शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। क्योंकि हाथियों जैसे बड़े-बड़े पत्थर और शैल-खण्ड इतने साधारण नहीं होते कि, गैंती या बेलचों से खोद डाले जाएँ। अतः उनको जड़ मूल से उखाड़ने का अन्य कोई अधिक शक्तिमान् साधन कैसा था, इसी का दिग्दर्शन महर्षि वाल्मीकि ‘समुत्पाटय’ इस शब्द के प्रयोग से स्पष्टतया कर रहे हैं। ‘समुत्पाटय’ शब्द का अर्थ सम्=सम्यक् रीति से यानि जितना चाहिए उतना ही और ‘उत्पाटय’ = उखाड़ कर, ऐसा होता है। अर्थात् बड़े-बड़े हस्तिप्राय पत्थर और शैल-खण्ड विना खोदे-समूल उखाड़ने का (Blasting) करने का कोई साधन (सुरंग लगाने या पत्थर फोड़ने की बारूद अथवा तत्सम कोई अन्य पदार्थ) वानरों को मालूम था, जो कि अनुमानतः वर्तमान सुधरे हुए यूरोपीय राष्ट्र जिसे ‘ब्लास्टिंग पॉवडर’ या ‘डायनामाइट’ कहते हैं, ऐसा ही कुछ हो सकता है। अन्यथा ‘समुत्पाटय’ शब्द का प्रयोग यथार्थ हो ही नहीं सकता।

ये जो बड़े-बड़े हस्तिप्राय पत्थर और शैलखण्ड उखाड़े जाते थे, उनको ढ़ोने के लिए भी कोई शक्तिमान् और सुधारे हुए साधन वानरों के पास होने चाहिये, इसका अनुमान **‘यन्त्रैः परिवहन्ति च’** इस वर्णन से हो सकता है। हस्तिप्राय पत्थर और शैलखण्ड को ढोना साधारण बैलगाड़ियों का काम नहीं था! क्योंकि ऐसे बड़े शैलखण्ड या पत्थर उनपर लादते ही-ढोना तो अलग ही रह जाता- पहले वे गाड़ियाँ ही चकनाचूर हो जातीं! परन्तु-

‘दृश्यन्ते परिधावन्तो देवदानवसंनिभाः’

अर्थात् देव और दानवों के सदृश महाबली वानरवीर उन पत्थरों और पर्वतखण्डों को लेकर दौड़ते हुए दिखाई दे रहे थे। इस महर्षि वाल्मीकि जी के वर्णन से भी यह स्पष्ट मालूम होता है कि, वानरों के पास अतिशय शक्तिवाली और वेगवाली यंत्रसामग्री (Extremely powerful and speedy machinery) थी। अर्थात् वानर बर्बर नहीं थे, यह बात निश्चित रूप से सिद्ध होती है।

सेतु किस प्रकार बाँधा गया, इसका भी वर्णन महर्षि वाल्मीकि जी के शब्दों में ही देखिये-

सूत्राण्यन्ये प्रगृहन्ति हायतं शतयोजनम्।
दण्डान्यन्ये प्रगृहन्ति विचिन्वन्ति तथापरे।
नलश्रवके महासेतुं मध्ये नदनदीपतेः। (युद्धकांड, २२/५८-६०)

अर्थात् कोई वानरवीर हाथ में सूत्र लिये हुए लंबाई-चौड़ाई नापने का काम करने पर नियुक्त थे और कोई दंड हाथ में लेकर ऊँचाई-निचाई (Label) देखते थे और शेष वानरवीर पत्थर, मिट्टी, वृक्ष आदि लाकर यथास्थान गर्तो में डालते थे और उनको पाटकर बराबर कर देते थे।’

उपर्युक्त वर्णन में जो ‘सूत्र’ शब्द है, वह आधुनिक फीता या (Measuring tape) और ‘दंड’ शब्द (Measuring pole) या (Levelling stuff) यानि ‘लट्ठे’ के द्योतक है। फीता से लंबाई और चौड़ाई नापी जाती है और लट्ठे से लेवल देखकर किस जगह कितना भराव डालना है किस जगह कितना खोदना है इसका ज्ञान होता है।

वर्तमान कालीन मिलिटरी इंजिनियरिंग द्वारा बेड़ो के पुल वगैरह बनाने के काम इसी प्रकार से होते हैं। इससे मालूम होता है कि, आधुनिक Military Engineering में भी त्रेतायुगीन वानर पीछे नहीं थे, किन्तु इतना बड़ा विस्तीर्ण समुद्र केवल पाँच ही दिन के अत्यल्प काल में पाट दिया, इस वर्णन से तो वानरों का Military Engineering बहुत ही उच्च श्रेणी का था, यह मान्य करना ही पड़ेगा। इससे भी वानर बर्बर नहीं थे, यही सिद्ध होता है।

अब यहाँ पर पाश्चात्य विद्वानों के सांप्रदायिक हमारे आधुनिक विद्वान् लोग यह शंका उपस्थित करेंगे कि, ‘बारूद का आविष्कार तो सबसे पहले यूरोप में ईस्वी सन् १२८७ में

'फ्रायर बेकन' नामक एक यूरोपीय रासायनिक ने किया है। इससे पूर्व बारूद जब संसार में ही नहीं थी, तो वह रामायणकालीन भारतवर्ष में कहाँ से आती?' लेखक महाशय को 'हमारी संस्कृति सर्वोच्च थी' यह बात किसी प्रकार से प्रमाणित करना है, सो उसके लिए रामायण के श्लोकों के मनगढंत और खींचतान कर अर्थ कर रहे हैं। आधुनिक विद्वान् लोगों की इस प्रकार विपरीत भावना हमारे उपर्युक्त विधानों के कारण हो जाय, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसलिये यूरोपीय विद्वानों के ग्रन्थों से हम आगे कतिपय प्रमाण उद्धृत करते हैं-

१. यूरोप की वर्तमान युद्ध-प्रणाली के आद्य प्रणेता नेपोलियन वोनापार्ट अपने 'Aid Memory to military Sciences' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं 'Gun-powder was known to India and China, and was used for the purpose of war many centuries before Christain Era.' अर्थात् बारूद बनाना और युद्ध में उसका उपयोग करना, दोनों बातें भारतीय तथा चीनी लोगों को ईसामसीह के जन्मकाल से कई शताब्दियों पूर्व मालूम थीं।

२. ग्रीनर नामक एक पाश्चात्य इतिहासकार अपने 'Gunnery in 1857' नामक ग्रंथ में लिखा हैं- 'The inhabitants of India were unquestionably acquainted with its (of gunpowder) composition at an early date.' अर्थात् भारतीय लोग बहुत प्राचीन काल से बारूद और उसके घटक द्रव्यों को जानते थे। यही ग्रंथकार फिर कहता है- Alexander is supposed to have avoided attacking the Oxydracca, a people dwelling between the Hydaphasis and Ganges, from a report of their having supernatural means of defence; for it is said, 'They do not come out to fight those who attack them, but those holy people beloved by God, overthrow their enemies, with tempest and thunder bolts shot from their walls and when Egyptain Herculese and Baccus overrun India, they attacked those people, but were repulsed with storms of thunderbolts and lightning, hurled from above.' This is no doubt evidence of the use of gunpowder.

सुना है कि जगविजेता सिकन्दर बादशाह ने गंगा और ब्रह्मपुत्रा नदियों के बीच के प्रदेश में जो 'ऑक्सीड्रेका' जाति के लोग रहते थे, उन पर जब आक्रमण करने का विचार किया, तभी उसको किसी ने कहा था कि, 'वे लोग बड़े विकट हैं। उन पर कोई शत्रु आक्रमण करने जाय, तो वे उससे लड़ने के लिए अपने किलों से बाहर कभी नहीं निकलते, किन्तु वे ईश्वर के प्यारे और पवित्र लोग किलों की प्राचीरों पर से ही उन आक्रमणकारियों पर वज्र बरसाकर उनका नाश करते हैं। जब मिश्र देश के हर्क्यूलीज और बेकस दोनों भारतवर्ष पर चढ़ाई करने आये थे, तब उन लोगों ने अपने किलों की प्राचीरों पर से ही उन पर विद्युत और वज्रों की वर्षा करके उनको भगा दिया था।' ग्रन्थकार (ग्रीनर) कहता है कि, 'भारतवर्ष में उस जमाने में तोप में चलाने वाली बारूद का व्यवहार युद्ध में होता था, इसका यह एक निःसंदिग्ध प्रमाण है।'

३. प्रेसिडेन्सी कॉलेज मद्रास प्राध्यापक गस्टाव ऑपर्ट, एम्. ए., पीएच. डी. (Professor Gustav Oppert, M.A., Ph.D.) Vius Weapons, Army-Organisation and Political Maxims of the Ancient Hindus नामक ग्रन्थ के चतुर्थ अध्याय में India-the Home of Gunpowder and Fire-arms शीर्षक विषय में लिखते हैं- (1) 'Every Schoolboy (in India) prepares his own gunpowder अर्थात् भारतवर्ष में प्रत्येक शालेय विद्यार्थी अपनी बंदूक की बारूद स्वयं बना लिया करता है।'

(2) "Explosive powder for discharging projectiles was known in India from the earliest period अर्थात् तोप के गोलों को दूर तक फेंकने वाली बारूद का बनाना भारतवासी लोग अत्यन्त प्राचीनकाल से जानते थे।

(3) " Gunpowder has been known in China as well as in Hindustan far beyond all period of investigation अर्थात् चीन और भारतवासी लोग बन्दूक की बारूद कल्पनातीत प्राचीनकाल से जानते हैं।'

प्रोफेसर गस्टाव और भी कहते हैं कि, 'विपक्षी के विरुद्ध जिन-जिन अस्त्रों का प्रयोग किया जाता है, उनमें बारूद-भरे धुएँ के गोलों का भी प्रयोग होता है, ऐसा महर्षि वैशंपायन अपने 'नीति-प्रकाशिका' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं। इन धुंए के गोलों को संस्कृत भाषा में 'धूम्र-गोलक' अथवा 'चूर्णगोलक' कहते हैं और उन्हीं को इंग्लिश भाषा में 'Smoke balls' कहते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों के ग्रन्थों से उद्धृत किये हुए उपर्युक्त प्रमाणों से हमें आशा है कि हमारे आधुनिक विद्वानों को यह विश्वास करने में अब कोई प्रत्यवाय नहीं होगा कि, वानरों को सुरंग लगाने का, बारूद बनाने का तथा उसका प्रयोग करने का यथेष्ट ज्ञान था। अर्थात् वानर बर्बर नहीं थे। किन्तु यह बात निर्विवाद प्रमाणित हो रही है कि, उनको Military Engineering का इतना ज्ञान था कि जो आधुनिक पाश्चात्य इंजीनियरों से कम नहीं कहा जा सकता।

कवि गौरव चौहान

वन्दनीय और निन्दनीय

खतरे का उद्घोष बजा है, रणभूमि तैयार करो,
सही वक्त है, चुन चुन करके, गद्दारों पर वार करो।
आतंकी दो चार मार कर, हम खुशियों से फूल गए,
सरहद की चिन्ताओं में हम, घर के भेदी भूल गए।
सरहद पर काँटे हैं, लेकिन घर के भीतर नागफनी,
जिनके हाथ मशालें सौंपी, वो करते हैं आगजनी।
ये भारत की बर्बादी के, कसे कथानक लगते हैं,
सच तो है दहशतगर्दों से, अधिक भयानक लगते हैं।
संविधान ने सौंप दिए हैं, अस्त्र-शस्त्र आजादी के,
शिक्षा के परिसर में नारे, भारत की बर्बादी के।
अफजल पर तो छाती फटती, देखी है बहुतेरों की,
मगर शहादत भूल गए हैं, सियाचीन के शेरों की।
जिस अफजल ने संसद वाले, हमले को अंजाम दिया,
जिस अफजल को न्यायालय ने, आतंकी का नाम दिया,
उस अफजल की फांसी को, बलिदान बताने निकले हैं,
और हमारे ही घर में हमको धमकाने निकले हैं।
बड़ी विदेशी साजिश के, हथियार हमारी छाती पर,
भारत को घायल करते गद्दार, हमारी छाती पर,
नाम कन्हैया रखने वाले, कंस हमारी छाती पर,
माल उड़ाते जयचन्दों के, वंश हमारी छाती पर।
लोकतंत्र का चुल्लू भर कर, डूब मरो तुम पानी में,
भारत गाली सह जाता है, खुद अपनी राजधानी में।
आज वतन को खुद के पाले, घड़ियालों से खतरा है,
बाहर के दुश्मन से ज्यादा, घरवालों से खतरा है।
देशद्रोह के हमदर्दी हैं, तुच्छ सियासत करते हैं,
और वतन के गद्दारों की, खुली वकालत करते हैं।
वोट बैंक की नदी विषैली, उसमें बहने वाले हैं,
आतंकी इशरत को अपनी, बेटी कहने वाले हैं।
सावधान अब रहना होगा, वामपंथ की चालों से,
बचकर रहना टोपी पहने, ढोंगी मफलर वालों से।
राष्ट्रवाद के रखवालो, मत सत्ता का उपभोग करो,
दिया देश ने पूर्ण तुम्हें, उस बहुमत का उपयोग करो।
हम भारत के आकाओं की, खामोशी से चौंके हैं,
एक शेर के रहते कैसे, कुत्ते खुलकर भौंके हैं।
मन की बातें बन्द करो, मत ज्ञान बाँटिये मोदी जी,
सबसे पहले गद्दारों की, जीभ काटिये मोदी जी।
नहीं तुम्हारे बस में हो तो, हमें बोल दो मोदी जी,
संविधान से बंधे हमारे, हाथ खोल दो मोदी जी।
अगर नहीं कुछ किया समूचा, भार उठाने वाले हैं,
हम भारत के बेटे भी, हथियार उठाने वाले हैं।।

आत्मचिन्तन का अवसर

भावेश मेरजा

महर्षि दयानन्द का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं मार्मिक वक्तव्य जो आर्य समाज को अपनी वर्तमान स्थिति और क्रियाकलापों पर पुनर्विचार करने के लिए अवश्य बाध्य करेगा।

१८७५ में मुम्बई में जब कई उत्साही सज्जनों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के समक्ष 'नया समाज' स्थापित करने का प्रस्ताव रखा तब उस दीर्घदृष्टा ऋषि ने अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए और उन लोगों को सावधान करते हुए कहा 'भाई हमारा कोई स्वतंत्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूँ और हमारे भारत में पच्चीस कोटि (उस समय की भारत की जनसंख्या) आर्य हैं। कई-कई बात में किसी-किसी में कुछ-कुछ भेद है, सो विचार करने से आप ही आप छूट जायेगा। मैं संन्यासी हूँ और मेरा कर्तव्य यही है कि जो आप लोगों का अन्न खाता हूँ इसके बदले जो सत्य समझता हूँ उसका निर्भयता से उपदेश करता हूँ। मैं कुछ कीर्ति का रागी नहीं हूँ। चाहे कोई मेरी स्तुति करे या निन्दा करे। मैं अपना कर्तव्य समझकर धर्म बोध कराता हूँ। कोई चाहे माने व न माने इसमें मेरी कोई हानि-लाभ नहीं है। आप यदि समाज से पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो तो समाज स्थापित कर लो इसमें मेरी कोई मनाही नहीं है। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जायेगा। मैं तो जैसा अन्य को उपदेश देता हूँ वैसा ही आपको भी करूँगा और इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतंत्र मत नहीं है और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूँ। इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पायी जाये तो युक्ति पूर्वक परीक्षा करके इसी को सुधार लेना यदि ऐसा न करोगे तो आगे यह भी एक मत 'सम्प्रदाय' हो जायगा और इसी प्रकार से 'बाबा वाक्यं प्रमाणं' करके इस भारत में नाना प्रकार के मत-मतान्तर प्रचलित होके, भीतर-भीतर दुराग्रह रखकर धर्मांध होकर लड़कर नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है। इसमें यह भी एक मत बढ़ेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारत वर्ष में नाना मत-मतान्तर प्रचलित हैं तो भी वे सब वेदों को मानते हैं। इससे वेदशास्त्र रूपी समुद्र में यह सब नदी नाव पुनः मिला देने से धर्म, एक्यता होगी और धर्म-एक्यता से सांसारिक व व्यावहारिक सुधारणा होगी और इससे कला-कौशल आदि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्य मात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपने धर्म बल से अर्थ काम और मोक्ष मिल सकता है।' कुछ प्रश्न जिनके उत्तर और समाधान हमें स्वयं ही ढूँढ़ने होंगेः-

१. क्या हम आर्य समाज में 'यथोचित व्यवस्था' रख पाये हैं?

२. क्या आर्य समाज गड़बड़ाध्याय नहीं हो गया है?

३. कहीं हम ऋषि दयानन्द को सर्वज्ञ मानकर 'बाबा वाक्यं प्रमाणं' वाला व्यवहार तो नहीं करने लगे हैं?

४. क्या अन्यों की दृष्टि में आर्य समाज ही एकमत पंथ सम्प्रदाय सदृश नहीं है?

५. क्या आर्य समाज देश में धर्म ऐक्यता निर्माण करने के कार्य में कुछ सार्थक कर पाया है?

६. क्या आर्य समाज अपने ही संगठन को एकता के सूत्र में आबद्ध रखने में विफल नहीं रहा है?

७.ऋषि दयानन्द विद्यमान होते तो हमारी वर्तमान स्थिति को देखते हुए हमें क्या उपदेश करते?

८.क्या आज हम ऋषि दयानन्द के सत्योपदेश को व्यावहारिक स्तर पर मानने को तैयार होते?

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास — भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री — डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

समाचार

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार राज्य आर्य प्रादेशिक उपसभा के मार्गदर्शन एवं मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा सह नालन्दा जिला आर्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में इस शिविर का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रमेन्द्र प्रसाद गुप्त एवं आर्य प्रादेशिक उपसभा के प्रधान डॉ. यू.एस. प्रसाद ने संयुक्त रूप से किया। प्रशिक्षण शिविर के प्रशिक्षक आचार्य विजय कुमार नैष्ठिक, उत्तर प्रदेश बदायूँ व पंडित रामायण शर्मा, नरकटिया गंज ने ५४ प्रशिक्षणार्थियों को समयबद्ध कार्यक्रम में बाँधकर एक अच्छी व्यवस्था से प्रशिक्षित किया।

कार्यक्रम के प्रेरणा स्रोत पंडित संजय सत्यार्थी, कार्यकारी मंत्री, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा थे। - अशोक आर्य, मंत्री, आर्य समाज

ऋषि बोध पर्व पर यज्ञ प्रवचन

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध दिवस (महाशिवरात्रि) पर्व पर विशेष यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया। पंडित रामदयाल के पौरोहित्य में सम्पन्न यज्ञ के मुख्य यजमान श्री के.पी.सिंह ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि बोध पर्व पर परमात्मा से कामना करें कि ऋषि दयानन्द की तरह हमें भी बोध प्राप्त हो।

आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने महर्षि दयानन्द के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रारम्भ में श्री इन्द्रदेव पीयूष ने मधुर भजन प्रस्तुत किए तथा श्री हीरालाल आर्य ने तबले पर संगत दी। सर्वश्री मुकेश पाठक, दिनेश अग्रवाल, शारदा जी गुप्ता, कृष्ण कुमार सोनी ने अतिथियों का स्वागत किया। आर्य समाज के प्रधान श्री भंवर लाल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। - कृष्ण कुमार सोनी,उप प्रधान

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के तत्वावधान में ५१ कुण्डीय यज्ञ

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं अध्यात्म पथ के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में वैदिक विद्या मंदिर अलवर के विशाल प्रांगण में ५१

कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री कैलाश चन्द विश्नोई पुलिस अधीक्षक अलवर ने 'ओ३म्' का ध्वज फहराकर एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। यज्ञोपरान्त आचार्य चन्द्रशेखर जी ने अत्यन्त सारगर्भित और सरस प्रवचन से श्रोताओं के मन को मोह लिया। विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, मंत्री श्री प्रदीप कुमार आर्य एवं निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया।

आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्यवीर दल पाली के तत्वावधान में १ से ३ अप्रैल २०१६ तक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अनेक विद्वानों, मनीषियों ने भाग लेकर समारोह को सफल एवं गौरवान्वित बनाया। इस अवसर पर लाखोटिया रंगमंच पर विराट कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में सर्वत्र आर्यवीर दल, पाली के युवाओं का परिश्रम दृष्टिगोचर हो रहा था।

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर सामाजिक समरसता रैली

दयानन्द कन्या विद्यालय, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर की ओर

से महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती के पुण्य अवसर पर सामाजिक समरसता रैली का आयोजन किया गया। हिरणमगरी क्षेत्र में निकाली गई इस रैली में विद्यालय की बालिकाओं, शिक्षिकाओं, आर्य समाज के प्रतिभागियों ने जाति प्रथा, अन्धविश्वास खत्म करो, देशोद्धारक, नशामुक्ति, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, जल-जंगल बचाओ आदि के नारे लगा समाज में जागरुकता हेतु प्रदर्शन किया।

रैली के पश्चात् आर्य समाज भवन में सभा को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापड़िया, विद्यालय की मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिन्धी, श्रीमती रेणु शर्मा, सुश्री करिश्मा वैष्णव आदि ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। - रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधरात्रि पर्व मनाया गया

आर्य समाज, मानसरोवर, जयपुर के तत्वावधान में ६ मार्च २०१६ को बड़ी श्रद्धा के साथ उपरोक्त पर्व एकीकृत रूप से मनाये गये। समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. कृष्णपाल सिंह ने हिन्दू समाज एवं राष्ट्र के लिए कल्याण एवं मुक्ति विषयक पहलुओं पर स्वामी दयानन्द के संघर्ष पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के प्रधान श्री अर्जुन देव कालड़ा ने किया तथा सभी आगन्तुकों के प्रति आभार प्रदर्शन मंत्री श्री सुरेश साहनी ने किया। - ईश्वर दयाल माथुर

आर्य समाज रामनगर, रुड़की का ३१ वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ

१८ से २१ मार्च २०१६ में आयोजित इस समारोह में प्रसिद्ध विद्वान् श्री संजीव रूप जी ने जहाँ सुन्दर वेद कथा प्रस्तुत की वहीं डॉ. महावीर जी अग्रवाल, डॉ. ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति आदि विद्वानों के प्रेरक प्रवचनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। समाज के मंत्री रामेश्वर प्रसाद सैनी ने सूचित किया कि १० अप्रैल २०१६ को नवसंवत्सर उत्सव पर विशेष कार्यक्रम रखा जाएगा। जिसमें डॉ. दिनेश चन्द्र शास्त्री व डॉ. योगेश शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का सान्निध्य प्राप्त होगा।

सार्वदेशिक वीरांगना दल का शिविर जम्मू में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर जम्मू शहर में दिनांक ५ से १२ जून २०१६ तक लगाया जायेगा। १४ वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएँ जिन्होंने पूर्व में न्यूनतम २ शिविरों में भाग लिया हो वे इस शिविर में सम्मिलित हो सकती हैं। आवेदन की अन्तिम तिथि १५ मई २०१६ है।

संपर्क सूत्र : साध्वी डॉ. उत्तमा यति
प्रधान संचालिका : ०९६७२२८६८६३,
मृदुला चौहान, संचालिका : ०९८१०७०२७६०

डी.ए.वी. केन्द्रीय समिति ने किया नवलखा महल का अवलोकन

उदयपुर में डीएवी इन्टरनेशनल स्कूल के लिए भूमि क्रय करने के संबंध में डी.ए.वी. की एक केन्द्रीय समिति के सदस्यगण श्री रमेश कुमार लीखा, श्री धर्मवीर सेठी एवं श्री अशोक गुप्ता, क्षेत्रीय निदेशक श्री एम.एल. गोयल, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उदयपुर के प्रबन्धक श्री डी. सेन शर्मा जब उदयपुर पधारे तब नवलखा महल स्थित आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा एवं श्रीमती बृजलता आर्या मल्टीमीडिया सेन्टर का अवलोकन किया और यहाँ किए जा रहे प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इन पदाधिकारियों के साथ उदयपुर में डी.ए.वी. के विस्तार के सम्बन्ध में भी चर्चा की गई।

पूर्व संसद सदस्य एवं आर्य समाज के नेता प्रो. रासासिंह जी का सम्मान

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा आर्य नेता प्रो. रासासिंह जी का सम्मान करते हुए उन्हें 'कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ' की उपाधि से सुशोभित करते हुए शॉल व श्रीफल के अतिरिक्त रु. ग्यारह हजार की नगद राशि से भी सम्मानित किया गया। इस उपलक्ष्य में न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से प्रो. रासासिंह जी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ एवं आर्य कन्या विद्यालय समिति के पदाधिकारियों को उनके इस श्रेष्ठ कार्य के लिए साधुवाद।

आर्य समाज नागदा द्वारा आयोजित ५१ कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ व चार दिवसीय संगीतमय वेद कथा का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज में ५१ कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ हुआ। आर्य समाज के प्रधान पूनमचन्द आर्य एवं मंत्री श्री कमल आर्य ने बताया कि ध्वजारोहण के पश्चात् यज्ञाचार्य डॉ. पंडित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी के आचार्यत्व में ५१ कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ का शुभारम्भ हुआ।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से पंचमहायज्ञ, नारी सशक्तीकरण, भ्रूण-हत्या-निषेध, युवा सशक्तीकरण, व्यसन-मुक्ति जैसे विषयों पर प्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजलि आर्या एवं अन्य विद्वानों ने प्रकाश डाला। इस अवसर पर अनेक लोगों ने व्यसन छोड़ने के संकल्प लिए।

– अग्निवेश पाण्डेय, मीडिया प्रभारी

गांधीनगर विकास समिति के चुनाव सम्पन्न

दिनांक १० जनवरी २०१६ को श्री चान्दुजी छपरीबन्द के निर्देशन में उक्त समिति के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें निर्विरोध रूप से श्री किशन बरासा को अध्यक्ष एवं श्री मनोहर अठवाल को महामंत्री निर्वाचित किया गया। खेल मंत्री एवं सांस्कृतिक मंत्री श्री विनोद कुमार राठौड एवं रवीन्द्र राठौड़ को बनाया गया।

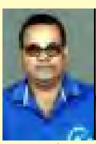

प्रतिस्वर

श्रद्धेय श्री अशोक कुमार जी आर्य, नमस्ते।

मुझे आपकी पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' का अंक पढ़ने का अवसर मिला इसमें अंकित निबन्ध वेद सुधा, ईश निन्दा, भारतीय संस्कृति में सद्भाव सूत्र, यजन से जश्न तक, भोगवादी संस्कृति के दुष्प्रभावों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार आदि निबन्ध पढ़कर लेखकों की विद्वता का बोध हुआ। इतने गंभीर भावों की यह पत्रिका दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करती रहे। सधन्यवाद।

– ओम स्वरूप शर्मा, अधिवक्ता, भिवानी

अंधविश्वास व पाखण्ड से बचने के लिए आर्य समाज की शरण में आना होगा– डॉ. सोमदेव शास्त्री

निम्बाहेड़ा, शान्तिनगर स्थित आर्यसमाज में रविवारीय साप्ताहिक सत्संग को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि आर्य समाज स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित एक आन्दोलन का नाम है यह कोई नया मत, पंथ या मजहब नहीं है। उन्होंने कहा कि आज समाज के आम लोगों को टी.वी. चैनलों व कई बाबाओं द्वारा इतना डरा दिया गया है कि मात्र छींकने व बिल्ली आदि के रास्ता काटने से वह सहम जाता है। उन्होंने फलित ज्योतिष व नवग्रह को कोरा अन्धविश्वास बताया और लोगों से कहा कि आज अंधविश्वास व पाखण्ड से बचने के लिए आर्यसमाज की शरण में आना होगा। समारोह को स्वामी ध्यानानन्द व आचार्य कर्मवीर मेधार्थी ने भी सम्बोधित किया । कार्यक्रम का संचालन मंत्री रविन्द्र साहू ने किया व आभार प्रधान विक्रम आंजना ने किया ।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – २० के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली– २०** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं– श्री नन्दकिशोर प्रसाद, खरसरवाँ (झारखंड), डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई (उ. प्र.), श्री नन्दकिशोर अवस्थी, हरदोई (उ. प्र.), वैद्या श्रीमती आशा भूषण (भारती), मुजफ्फरपुर (बिहार), श्री हर्षवर्द्धन कुमार आर्य, नवादा (बिहार), श्री किशना राम आर्य, नागौर (राज.), श्री संजय आर्य, सोनीपत (हरि.), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन, सीतामढ़ी (बिहार), श्री रमेश आर्य, गुरदासपुर (पंजाब), किरण आर्या, कोटा (राज.), श्री मुकेश पाठक, उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता भदौरिया, ग्वालियर (म. प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया, शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेव भाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), श्री अमित कुमार, झुन्झुनु (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान, अजमेर (राज.), श्रीमती सुमन सूद, सोलन (हि. प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी, बीकानेर (राज.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

ध्यातव्य– पहेली के नये नियम पृष्ठ १५ पर अवश्य पढ़ें।

कथा सरित

जीवन का पुल

राम और श्याम नाम के दो कृषक भाई आसपास ही रहते थे। दोनों के खेत एक दूसरे सटे हुए थे जिसके बीच में एक चारागाह मौजूद था। दोनों के जानवर वहाँ चरते थे। दोनों में बहुत ही प्यार व समझदारी थी। हमेशा एक दूसरे की मदद करने को तैयार रहते थे। इस प्रकार साथ-साथ चालीस वर्ष तक रहने के बाद अचानक एक दिन एक छोटी सी बात पर दोनों में मतभेद हुआ और धीरे-धीरे वह इतना बढ़ गया कि दोनों भाइयों में जोरदार झगड़ा हुआ और इसके बाद दोनों ने एक दूसरे से बातचीत करना बन्द कर दिया। इस स्थिति को एक सप्ताह बीत गया। एक दिन एक बढ़ई बड़े भाई के दरवाजे पर आया और बोला कि- मुझे काम की आवश्यकता है। अगर आपके पास मेरे लिए कोई कार्य हो तो मैं उसे कर सकता हूँ। बड़े भाई ने थोड़ी देर तक सोचा और फिर बढ़ई को कहा कि- हाँ मेरे पास तुम्हारे लिए काम है। देखो वो मेरा पड़ौसी जो कि वास्तव में मेरा भाई है उससे सात दिन पूर्व मेरा झगड़ा हो गया था और वह चारागाह के बीच में से अपने बुलडोजर को नदी के बाँध तक इस प्रकार ले गया कि वहाँ एक सकरी खाई बन गई है। मैं चाहता हूँ कि ये ढ़ेर सारी लकड़ी जो मेरे फार्म में पड़ी हुई है उसकी सहायता से तुम एक आठ फीट ऊँची चारदीवारी उस जगह बना दो ताकि मैं अपने नालायक भाई का मुँह भी नहीं देख सकूँ।

बढ़ई ने कहा कि मैं सब कुछ समझ गया हूँ और मैं यथोचित कार्य कर दूँगा पर इसके लिए कुछ सामान आपको मुझे दिलाना होगा। राम बढ़ई को लेकर बाजार में गया और उसको सामान दिलवा दिया और स्वयं किसी दूसरे कार्य से शहर में ही रह गया। बढ़ई ने बड़ी मेहनत करके शाम तक अपना कार्य पूरा कर दिया। इधर राम शहर से वापस लौटा। रास्ते भर यह सोचता आ रहा था कि अब तक बढ़ई ने चारदीवारी बना दी होगी और अच्छा है मुझे श्याम का मुँह भी नहीं देखना पड़ेगा। पर जब वह खेत पर पहुँचा तो उसका मुँह खुला का खुला ही रह गया। वस्तुतः उस बढ़ई ने चारदीवारी बनाने की बजाय एक बड़ा सुन्दर पुल बना दिया था। श्याम यह समझते हुए कि भाई के आदेश पर ही इस पुल का निर्माण हुआ है पहले ही द्रवित हो चुका था कि मेरा इतना लड़ने व ऐसा कृत्य करने के बावजूद भी बड़े भाई ने रिश्ता बनाये रखने के लिए इस पुल का निर्माण करवाया है। वह पुल के अपने वाले छोर पर खड़ा होकर राम का ही इन्तजार कर रहा था। राम जैसे ही आश्चर्य में गोते लगाता हुआ पुल के अपने वाले सिरे पर पहुँचा त्यों ही श्याम ने अपनी सोच आँसू बहाते हुए अपने बड़े भाई के सामने प्रकट की कि मैं कितना क्षुद्राशयी हूँ और आप कितने विशाल हृदय वाले हो। इतना ही कहना था कि राम के अंदर से कटुता बाहर निकल गई और वह भी आगे बढ़ा और पुल के बीच में दोनों भाई सारे मतभेद और कटुता मिटाकर एक दूसरे के गले लग गए। इसके पश्चात् मन ही मन बढ़ई की समझदारी की प्रशंसा करते हुए राम ने उसकी तरफ देखा जो कि तब तक अपने औजार रखने के बक्से को बन्द कर रहा था और उससे कहा कि आप यहीं रुकिए मेरे पास अभी आपके लिए बहुत से काम हैं। बढ़ई ने उत्तर दिया कि मुझे यहाँ रुककर और आपका कार्य करके प्रसन्नता होती परन्तु मुझे अभी बहुत सारे पुलों का निर्माण करना है।

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

सत्य के अर्थ का प्रकाश करना चाहता हूँ, असत्य के अनर्थ से अवगत कराना चाहता हूँ।
आर्यों आर्यत्व का पाठ पढ़ाना चाहता हूँ, राष्ट्र को कुरीतियों से मुक्त कराना चाहता हूँ।।

आज १० मार्च २०१६ को नवलखा महल, उदयपुर में अपने साथियों (डी. ए. वी के पदाधिकारियों एवं अन्य) के साथ आकर आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समस्त जीवन-चरित्र की Power Point Presentation देखकर न केवल प्रसन्नता हुई अपितु अपना जीवन धन्य हो गया। इसका जितना अधिक प्रचार-प्रसार होगा उतना ही आर्य सिद्धान्तों और आर्य समाजों की प्रगति होगी जिसकी आज के युग में नितान्त आवश्यकता है। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए।

- रमेश कुमार लीखा, सचिव डी.ए.वी, प्रबन्धकतृ सभा, नई दिल्ली

सत्यार्थ-पीयूष

राजनीति और धर्म

राजनीति तथा धर्म के सम्बन्ध को निरूपित करते हुए प्रो. बी. बी. मजूमदार लिखते हैं-

He (Dayanand) interpreted Vedas in such a way that there was no incongnuity between religion (धर्म) and politics. To him the establishment of good government was the very basis of spiritual life.- **B.B. Majumdar (Former prof. of History; an eminent author)**

इस प्रकार स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समस्त चिन्तन की मुख्य विशेषता यह है कि वह सार्वकालिक और सार्वभौमिक है तथा उसका आधार धर्म एवं नैतिकता है। उनके लिए वेद परमात्मा का आदेश तथा स्वतः प्रमाण हैं। उनका राजनीति विषयक चिन्तन भी इसलिए उत्कृष्ट है क्योंकि उन्होंने राजनीति का आधार भी धर्म एवं नैतिकता को ही माना है। राजनीति के लिए 'राजधर्म' शब्द का प्रयोग करना इसका प्रमाण है। उन्होंने अनेक स्थानों पर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि की चर्चा की है और इसे ही मानव जीवन का परम लक्ष्य बताया है। उनके दृष्टिकोण में राजनीति भी इन्हीं पुरुषार्थों की सिद्धि का एक माध्यम है। इसलिए उन्होंने राजा से लेकर प्रजा तक को धर्म पर आरूढ़ रहने के निर्देश दिए हैं।

आज हमारे देश की अवनति का मुख्य कारण यही है कि राजनीति से धर्म और नैतिकता का लोप हो गया है जबकि यही चतुर्दिक उन्नति का आधार है। महर्षि जी ने राजधर्म के अन्तर्गत जो-जो विचार व्यक्त किए हैं वही हमारे देश को पुनः समस्त संसार में शिरोमणि बना सकते हैं। इसी से सुराज्य की स्थापना हो सकेगी। उनके अनुसार धर्म कोई मत, मजहब या सम्प्रदाय नहीं है बल्कि उन्होंने धर्म को मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा है। उनका मत साफ है **'धर्मो धारयते प्रजा'**- धर्म का नाम धर्म इसलिए है क्योंकि वह सारी प्रजा को धारण करता है। उनके अनुसार धर्म कोई बाहरी दिखावा या बाहरी चिह्न मात्र नहीं है बल्कि उन्होंने इसे व्यक्ति के जीवन का अंग माना है। उनका धर्म 'जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर आधारित है। उसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना निहित है। वैदिक राजनीति में राजा को ही धर्म का रक्षक माना गया है- (महा.आदि. ४१)। उसे धन का उपार्जन भी धर्म के आधार पर ही करने का निर्देश दिया गया है। (महा. शान्ति पर्व ७१-१४, १३०-४०) अन्यथा उसका राज्य नष्ट हो जाएगा......। (शा. प. १२०-२८) में राजा को आदेश है कि अधर्मयुक्त लोगों को अपने कर्मचारियों के रूप में नियुक्त न करे।.......(८८-१८) में तो राजा का आदेश दिया गया है कि हे राजन्! मद्यशालाएं, वेश्याएँ, घृणित व्यापार करने वाले, नाचने गाने वाले बदमाश लोग, जुआ खेलने वाले दुराचारी लोगों, जो धर्मभ्रष्ट एवं देश के लिए घातक हैं, उन्हें देश से बाहर कर दे अन्यथा समस्त प्रजा दुःखी ही रहेगी.....।

किसी ने सही कहा है-

'यद् भूतहितमत्यंतं तत् सत्यमिति में मतम्'।

जिससे अधिक से अधिक प्राणियों का अधिक से अधिक हित हो वही सत्य है..... वही धर्म है। महर्षि जी के अनुसार यही राज्य व्यवस्था का आधार होना चाहिए। अर्थवेद के १२ वें काण्ड का प्रथम सूक्त राजनीति विषयक सूक्त है तथा इसका मूल संदेश है कि आदर्श राज्य धर्म-राज्य होना अपेक्षित है। यहाँ पर सत्य, परोपकार, न्याय, तप, दया, संयम, सहिष्णुता आदि को ही धर्म का पर्याय माना गया है।

धार्मिक राजा के राज्य में ही प्रजा आनन्द के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकती है। धर्मानुकूल राज्य व्यवस्था चलाने वाले राजा के प्रति ही प्रजा विनम्र और आज्ञाकारी रहती है। महाभारत के राजसूय यज्ञ के अवसर पर शिशुपाल बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात कहता है कि हम सब लोग युधिष्ठिर के डर से, किसी लोभ के वश या खुशामद किए जाने के कारण इसे 'कर' नहीं देते, किन्तु यह जानकर कि युधिष्ठिर एक धार्मिक राजा है..... क्योंकि यह धर्म में प्रवृत्त होकर राज्य कर रहा है, इसलिए 'कर' देते हैं.....। डंके की चोट पर कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का वैदिक धर्म और नैतिकता पर आधारित राजधर्म विषयक चिन्तन आज भी आदर्श राज्य की स्थापना के लिए अत्यधिक सार्थक, रचनात्मक, व्यवहारिक एवं सामयिक है तथा चिन्तन के कार्यान्वयन से आर्यावर्त्त के सार्वभौमिक सुराज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। प्रमुख इतिहासज्ञ प्रो. बी.बी मजूमदार ने Dayanand and His Political thought में बिल्कुल ठीक लिखा है- It is needless to say that in these days of class consciousness and class hostility Dayananada's ideal should be placed in the forefront of all schemes and programmes of reform. But the difficulty is that the modern world has almost entirely lost sight of the philosophy of life, without which such cooperation is impossible. Dayananada was fully aware of it and hence he reiterated again and again the supreme need of upholding Dharma in every sphere of human activity.

सम्पादक- अशोक आर्य

हृदय रोगों से बचाव

हृदय रोग व ब्लड प्रेशर का निदान

१. हृदय रोग एवं ब्लड प्रेशर के निदान के लिए प्रातः जागना, ईश्वरोपासना, ध्यान, प्राणायाम, हल्के योगासन, सूक्ष्म व्यायाम, प्रातः ३ कि. मी. भ्रमण, समय से सही भोजन व निद्रा, सात्विक विचार, आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन व मनन, प्रकृति के साथ यथासंभव संतुलन बनाना आवश्यक है।

२. किसी भी विषय की चिन्ता न कर चिन्तन करें। अगर आप प्रतिदिन कुछ समय निकालकर उनके कारणों और निदान विधियों का अभ्यास करेंगे तो आप उनके दुष्प्रभावों से बचे रह सकेंगे।

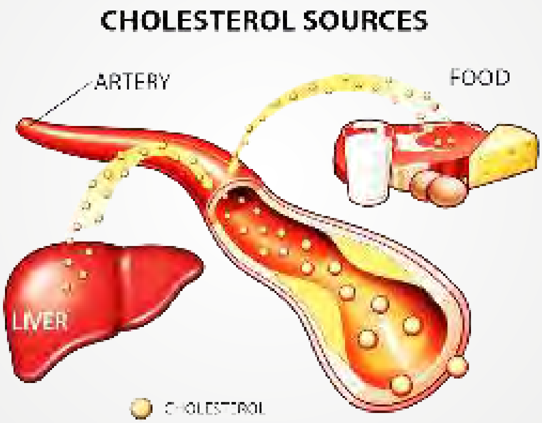

३. आकस्मिक शारीरिक या मानसिक तनाव जनित प्रतिकूल परिस्थितियों में ध्यान की क्रिया आँख बन्द कर करें। चमत्कारिक व आश्चर्यजनक लाभ एवं शान्ति मिलेगी और आप नई स्फूर्ति और साहस के साथ समस्या का समाधान निकाल लेंगे।

४. प्रातः मंजन कर गला साफ करने के बाद प्रतिदिन दो गिलास जल का सेवन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त दिन में ६-७ गिलास जल सेवन व दोपहर भोजन के बाद छाछ एवं रात्रि भोजन के बाद गाय के दूध का सेवन उपकारी है।

५. अहितकर भोजन- बिस्कुट, पावरोटी, मैदा, चाय, कॉफी, मांसाहार, तली चीजें, शराब एवं अति हानिकारक कार्बनडायआक्साईड युक्त कोल्ड ड्रिंक तथा कोई भी धूम्रपान इत्यादि का सेवन न कर अपने जीवन को दीर्घायु बनायें।

६. हितकर भोजन- सलाद, कच्ची हरी सब्जी का सूप, फल (आम व केला छोड़कर) सूखे मेवे (काजू छोड़कर) जौ का आटा, कच्चा प्याज, लहसुन आदि। ऑर्गेनिक भोजन का विशेष महत्व है। दिन भर में ५०० मि. ली. दूध, ३०० ग्राम हरी सब्जियों का सूप, १०० ग्राम जौ और चक्की में पिसे गेहूँ के चोकर सहित आटे की रोटियों का सेवन करें। मसाले और घी-तेल का उपयोग नगण्य मात्रा में उपकारी है। पपीता, करेला, बिजौरा, अमरूद, सेव व केधारी अनार उपयोगी फल हैं।

७. प्रातः छिलके के साथ निकाला दो कप लौकी का जूस (साथ में ४ तुलसी पत्ता और ४ पोदीना पत्ता) का सेवन हृदय रोगियों के लिए बहुत ही लाभकारी है।

८. प्रति सप्ताह एक बार ईसबगोल की भूसी एक कप छाछ के साथ नाश्ते के बाद अवश्य लेवें।

कोलेस्ट्रॉल, ट्राईग्लिसराईड को सामान्य करने के लिए अर्जुन छाल का उपयोग या अर्जुनारिष्ट ४ चम्मच जल के साथ भोजन के बाद प्रतिदिन दिन भर में दो बार २-३ महीनें तक लेवें, यह अत्यन्त लाभकारी हैं।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा

HOT HAI BOSS
Dollar
ULTRA™
THERMALS

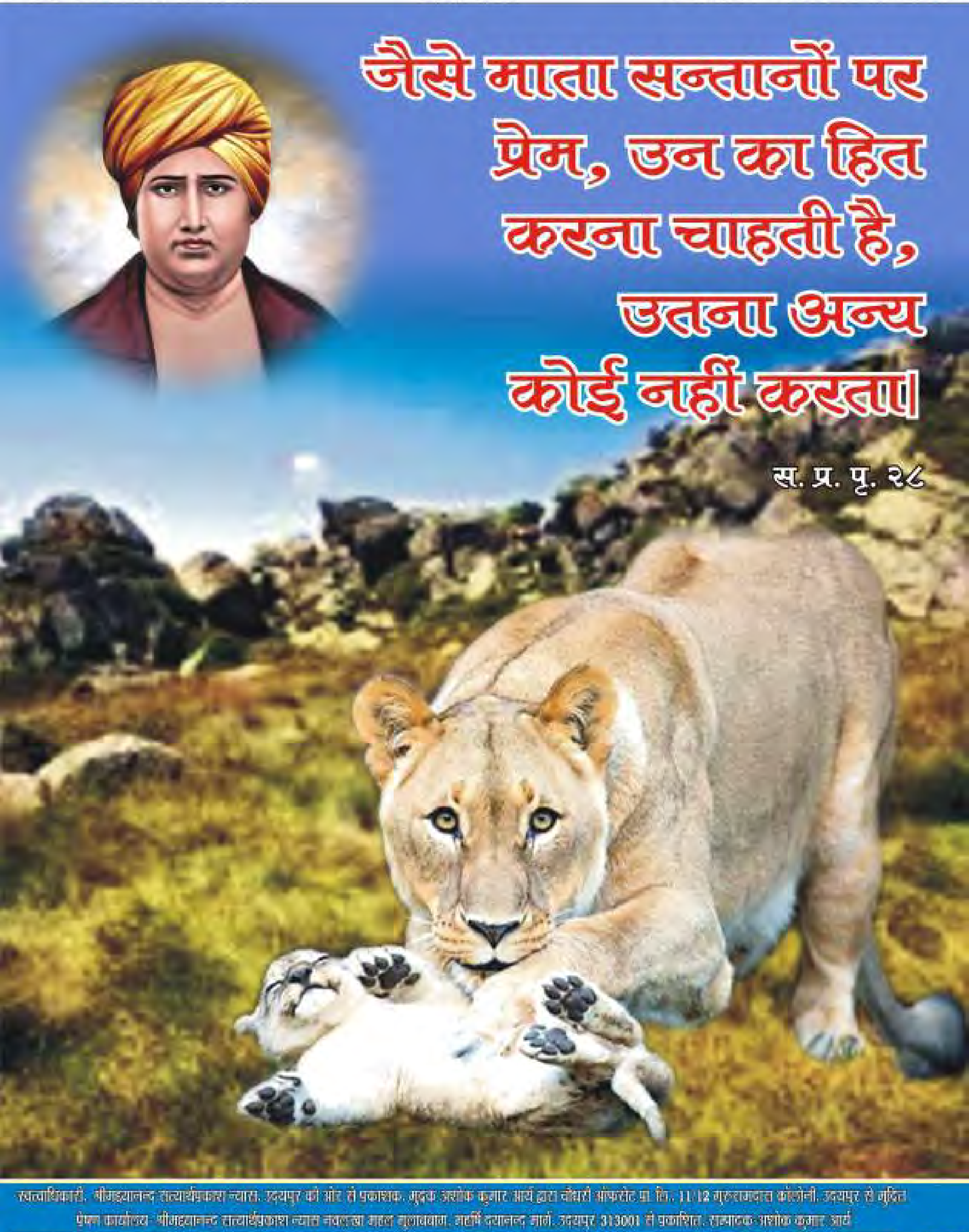

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11-12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर 313001 से प्रकाशित, सम्पादक- अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर